सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

निर्देशिका

भाग–1

2012-13

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
शंकर नगर, रायपुर (छत्तीसगढ़)

प्रकाशन–2011

संरक्षण एवं प्रेरणा स्रोत

के.आर.पिस्दा (आई.ए.एस.)
मिशन संचालक
राज्य परियोजना कार्यालय, रा.गा.शि.मि.
रायपुर

अनिल राय (आई.एफ.एस.)
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
शंकर नगर, रायपुर

कार्यक्रम समन्वयक
विद्या डांगे (व्याख्याता)
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, शंकर नगर, रायपुर

विशेष सहयोग
अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
एस.के.वर्मा (सहा.प्राध्यापक)

मुद्रण तकनीकी सहयोग
एम.ए.अमीन

लेखन एवं सम्पादन समूह
ज्योति चक्रवर्ती, नीलम अरोरा
लक्ष्मणदास मानिकपुरी, पीला सिंह चौहान, श्वेता झा, सूर्यकांत बैरागी, मारक्युस नंद,
शैलेन्द्र पटेल, चंद्रशेखर सिंह, प्रणव मांडरिक, योगेश पांडे, किरण कन्नौजे,
धीरा तहलियानी, गजेन्द्र देवांगन, नरेन्द्र तिवारी

टंकण, ले-आउट एवं मुखपृष्ठ
अमन शर्मा

आमुख

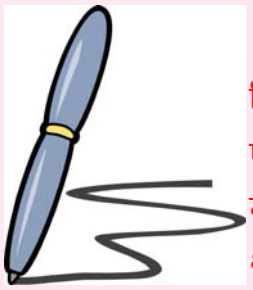

शिक्षक मित्रो ! सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन निर्देशिका आपके हाथ में हैं । यह निर्देशिका आपको सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया को व्यापक संदर्भ में समझने एवं कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के क्रियान्वयन में सहायक होगी। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कक्षा एवं विद्यार्थी आधारित होता है। प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति, रुचि, क्षमता अलग-अलग होती है, किन्तु हर बच्चे में कोई न कोई कार्य को बेहतर ढंग से करने की क्षमता अवश्य होती है। शिक्षक का दायित्व है कि वह बच्चों को सीखने के पर्याप्त अवसर दें, जिससे बच्चे में छिपी प्रतिभा बाहर आ सके तथा बच्चे के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास हो सके।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन निरंतर एवं नियमित चलने वाली प्रक्रिया है, जो कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ-साथ चलती है अर्थात् सीखना-सिखाना एवं मूल्यांकन दोनों साथ-साथ चलते हैं शिक्षक अनेक गतिविधियों एवं उपकरणों के माध्यम से यह पता करते हैं कि उनके बच्चों ने क्या सीखा एवं सीखने में कहाँ मदद की आवश्यकता है। इस हेतु शिक्षक आवश्कतानुसार उपचारात्मक शिक्षण करता हैं। मूल्यांकन करने का यह दायित्व सिर्फ शिक्षक पर ही नहीं होता, बच्चे भी अपना स्वमूल्यांकन करते हैं। सहपाठी भी एक दूसरे का मूल्यांकन कर यह देखते हैं कि उन्हें किन-किन क्षेत्रों में और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया में यह अवश्य ध्यान दें कि बच्चों में भय न हो। तनावमुक्त होकर सीखे। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक एवं बच्चों के बीच एक मैत्रीपूर्ण संबंध हो जहाँ बच्चे निर्भय होकर अपनी बात शिक्षक से कह सकें, पूछ सकें।

साथियो ! इस निर्देशिका में पाठ संबंधी दक्षतायें एवं उपकरणों का उल्लेख उदाहरण के रूप में किया गया है यह अंतिम नहीं है- आप स्वयं भी पाठ के अनुरूप कौशलों का चिन्हांकन कर उनके अनुरूप उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं एक कौशल के विकास के लिए, एक से अधिक उपकरणों का भी उपयोग कर सकते हैं। आप अपने बच्चे का मूल्यांकन करने हेतु स्वतंत्र हैं, क्योंकि आप ही अपने विद्यार्थी को बहुत अच्छे से जानते हैं। अतः बच्चों की आवश्यकतानुसार, रुचि अनुसार, उपकरणों का उपयोग कर मूल्यांकन करें। हाँ, इतना अवश्य ध्यान रहें कि बच्चे की प्रगति सभी क्षेत्रों में निरंतर हो। बच्चे की प्रगति की तुलना अन्य साथी से न करें। बच्चों के माता-पिता को इस बात से अवश्य अवगत करायें कि बच्चें की रुचि किन-किन क्षेत्रों में है जिससे बच्चे उसकी रुचि अनुसार उचित मार्गदर्शन मिल सके एवं वह अपना स्वभाविक विकास कर सके।

प्रत्येक शिक्षक अपने ढंग से बच्चों का मूल्यांकन करते हैं। शिक्षण मूल्यांकन की अपनी-अपनी योजना होती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि आप हमारे इन सुझावों से सहमत होंगे और इसे अवश्य अपनायेंगे।

आशा है यह निर्देशिका आपको सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के क्रियान्वयन में सहायक सिद्ध होगी।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

शंकर नगर, रायपुर

अध्याय–1 : सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

1.1	प्रस्तावना	6
1.2	RTE-2009 के संदर्भ में विद्यार्थी का मूल्यांकन	8
1.3	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का आशय	8
1.4	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का आशय यह नहीं है।	10
1.5	आकलन व मूल्यांकन में अंतर	10
1.6	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य	11
1.7	सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के सिद्धांत	12

अध्याय–2 : मूल्यांकन के क्षेत्र एवं प्रकार

2.1.1	संज्ञानात्मक क्षेत्र	13
2.1.2	सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र	13
2.2.1	संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन (फारमेटिव मूल्यांकन व समेटिव मूल्यांकन)	13
2.2.2	संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन कब करें ?	15
2.2.3	संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन कैसे करें ?	15
2.2.4	संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्याकंन में ग्रेडिंग प्रणाली	16
2.3.1	सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन	16
2.3.2	सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन कब करें ?	18
2.3.3	सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र का उपकरण	18
2.3.4	सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र का ग्रेड	18
2.4	समेकित ग्रेड	19
2.5	उपचारात्मक शिक्षण	19
2.5.1	उपचारात्मक शिक्षा कब व कैसे?	20

अध्याय–3 : कक्षा अधिगम प्रक्रिया एवं मूल्यांकन

3.1 कक्षा अधिगम प्रक्रिया एवं आकलन 25

3.2 बच्चे सीखते कैसे है ? 26

3.3 आकलन योजना 27

3.4 प्राथमिक स्तर पर बच्चों के सीखने का आकलन 28

3.5 आकलन सीखने का एक साधन 29

3.6 कौशलों का विकास एवं मूल्यांकन 30

अध्याय–4 : सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के उपकरण

4.1 उपकरण 31

4.2 विवरणात्मक टीप 40

अध्याय–5 : समेटिव मूल्यांकन

5.1 समेटिव आकलन क्या है ? 42

5.2 समेटिव आकलन क्यों ? 42

5.3 समेटिव आकलन कब करें ? 42

5.4 फारमेटिव आकलन एवं समेटिव आकलन में अंतर 43

5.5 समेटिव आकलन कैसे करें ? 43

5.6 समेटिव आकलन हेतु प्रश्न पत्रों का प्रारूप 43

अध्याय–6 : रिकार्ड संधारण एवं दस्तावेज़ीकरण

6.1 शिक्षक डायरी

6.2 प्रोफाइल

6.3 मूल्यांकन पंजी

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
(Continuous and Comprehensive Evaluation)

1

1.1 प्रस्तावना

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के पहले हमें अपनी शिक्षा के उद्देश्यों पर गंभीरता से विचार करना होगा। हमारी शिक्षा के उद्देश्य क्या हैं ? क्या इन उद्देश्यों के अनुरूप हमारी कक्षा–शिक्षण

अधिगम प्रक्रिया हो रही है ? जब भी हम शिक्षा के उद्देश्यों की बात करते हैं तो एक सार्वभौमिक उद्देश्य हमारे सामने होता है, बच्चें का सर्वांगीण विकास करना। सर्वांगीण विकास याने बच्चे का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास। इन उद्देश्यों के आधार पर यदि हम अपने आस–पास के विद्यालयों का अवलोकन करें तो पाते हैं की ऊपर जिस विकास की बातें हम कर रहे हैं उस पर और कार्य करने की आवश्यकता है। बच्चों के मानसिक विकास के लिए कक्षा में सीखने–सिखाने के नाम पर जो क्रियाकलाप कराये जाते हैं, उनका संबंध किताबों के इर्द–गिर्द होता है जो पूरी तरह रटने पर आधारित हैं यानि हमारे शिक्षा के उद्देश्य परीक्षा पास करने के उद्देश्यो में बदल जाते हैं और इस पूरी प्रणाली में न सिर्फ बच्चे, शिक्षक और पालक बल्कि पूरा समुदाय शामिल होता है। परीक्षा में जितने अच्छे अंक बच्चा प्राप्त करता है वह उतना ही होशियार माना जाता है, यदि बच्चा कम अंक प्राप्त करता है तो कमज़ोर माना जाता है। भले ही बच्चा कितना भी व्यवहार कुशल, अच्छा कलाकार, अच्छा खिलाड़ी क्यों न हो। अतः बच्चे के पास एक अच्छी डिग्री तो होती है, परन्तु व्यावहारिक ज्ञान लगभग नगण्य होता है। परिणाम–स्वरूप ऐसी शिक्षा के माध्यम से हम एक अच्छा इंसान बनाने के बजाय तकनीक आधारित मानव बना रहे हैं।

NCF-2005, कोठारी आयोग राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, RTE-2009 ने समय–समय पर शिक्षा की नीतियों में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रक्रिया को लेकर चिंताएँ व्यक्त की जाती रही है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में इस बात का उल्लेख किया गया है कि मूल्यांकन एक व्यापक एवं सतत् प्रक्रिया है।

मूल्यांकन का मतलब बच्चों को उसकी सफलता या असफलता का प्रमाण–पत्र देना ही नहीं, बल्कि उसकी योग्यता को बढ़ावा देते हुए सही दिशा प्रदान करना है। इसके लिए आवश्यक है कि बच्चों का सतत् आकलन किया जाए जिससे यह पता चल सके कि बच्चे के विकास की गति ठीक है या नहीं, यदि ठीक नहीं है तो उसे किस प्रकार के बाह्य मदद की आवश्यकता है ? सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का मूल विचार इस तथ्य पर आधारित है कि सब बच्चे एक से नहीं होते। बच्चों में सोचने–समझने और तर्क करने की क्षमता भिन्न–भिन्न होती है जिसके आधार पर उनका विकास होता है। इसके अलावा यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि विकास टुकड़ों में नहीं होता है बल्कि समग्र एवं निरंतर होता रहता है। मूल्यांकन प्रक्रिया में हम इस बात के प्रमाण जुटाते हैं कि बच्चों की योग्यता या व्यवहार में कितना

अंतर आया है, उसने कितनी प्रगति की है। प्रमाण जुटाने के लिए हम कुछ तरीकों का सहारा लेते हैं और उनके परिणामों का विश्लेषण करते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–2005 में, भयभीत कर देने वाली इस मूल्यांकन प्रक्रिया को लेकर गंभीर चिंताएँ व्यक्त करते हुए हल सुझाये गए हैं। शिक्षा के अधिकार अधिनियम–2009 में भी परीक्षा के भय और तनाव को दूर करने के लिए कक्षा 5वीं और 8वीं की बोर्ड परीक्षा की अनिवार्यता को समाप्त कर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को अनिवार्य करने की बात की गई।

सुझावों को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ राज्य में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया आंशिक रूप से वर्ष–2008 से लागू की गई जिसमें 7 इकाई मूल्यांकन एवं 3 सेमेस्टर का प्रावधान था। बच्चों को तीनों सेमेस्टर के अंकों को जोड़कर पास किया जाता था। मूल्यांकन लिखित कार्य के अलावा मौखिक, प्रोजेक्ट वर्क एवं प्रायोगिक कार्य के आधार पर भी किया जाता था। वर्तमान में इस मूल्यांकन पद्धति में शिक्षा के अधिकार अधिनियम–2009 के संदर्भ में सुधार कर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है।

1.2 RTE-2009 के संदर्भ में विद्यार्थी का मूल्यांकन–

निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 प्रदेश में एक अप्रैल–2010 से लागू किया जा चुका है। अब कक्षा 1 से 8 तक न तो कोई बोर्ड परीक्षा होगी, और न ही बच्चों किसी कक्षा में रोका जा सकेगा। अब परीक्षा के स्थान पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन होगा। शिक्षा का अधिकार अधिनियम प्रत्येक बच्चे के प्रति धैर्य एवं समुचित स्नेहपूर्वक व्यवहार पर बल देता है, चाहे उसके सीखने की शैली और गति कैसी भी क्यों न हो। बच्चे के प्रति स्नेहिल और संवेदनशील व्यवहार राष्ट्रीय प्रगति में उसकी सार्थक भागीदारी को तय कर सकता है। तात्पर्य यह है कि स्कूल सीखने–सिखाने की ऐसी जगह बने, जहाँ हर बच्चे को सीखने के अवसर मिलें। उसके गुण व रुचियों के विकास में उसे सदैव मदद मिलें, ताकि प्रत्येक बच्चा जीवन में आने वाली हर परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम हो सके। पुरानी परीक्षा पद्धति के स्थान पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन, लाने के पीछे निम्नलिखित कारण हैं–

1. परीक्षा के भय व मानसिक तनाव को खत्म किया जा सके।
2. रटने–रटाने के स्थान पर सृजन, चिंतन, निर्णय, तर्क तथा विश्लेषण की क्षमता का विकास बच्चों में किया जा सकें।
3. प्रमाण–पत्र में केवल सफल होने के स्थान पर कक्षाओं हेतु निर्धारित दक्षताओं को पूरा करने संबंधी बातों का उल्लेख किया जा सके।
4. **ONE SIZE FITS ALL** अर्थात् एक ही पैमाना सब के लिए लागू होता है के स्थान पर बहुस्तरीय ग्रेडिंग से बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्न निर्मित किए जा सकेंगे।
5. शालाओं का सशक्तिकरण करना अर्थात शालाओं में बाल केंन्द्रित वातावरण तैयार करना जिससे बच्चों में क्षमता एवं स्तरानुसार कौशलों का विकास किया जा सके।

1.3 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का आशय (CCE Means)–

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों के विकास के समस्त क्षेत्रों का सतत् एवं नियमित आकलन है। जिसमें विभिन्न विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से बच्चों का आकलन किया जाता है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में तीन शब्द हैं सतत्, व्यापक एवं मूल्यांकन।

1.3.1 सतत् (Continuous)–

सतत् का शाब्दिक आशय "लगातार" है। सतत् के साथ आकलन शब्द जुड़ा है अर्थात लगातार आकलन करना। सतत् आकलन एवं कक्षा शिक्षण प्रक्रिया साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया है। इसे हम पृथक–पृथक रूप में नहीं देख सकते। यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का समेकित भाग है। इसमें बच्चे

का आकलन सतत् एवं नियमित रूप से किया जाता है जो पूरे वर्ष औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से चलता रहता है। इसमें न सिर्फ शैक्षिक क्रियाकलाप (विषय आधारित) बल्कि सहशैक्षिक क्रियाकलापों का भी सतत् आकलन किया जाता है, जिससे बच्चों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन के साथ–साथ यह भी ज्ञात होता है कि बच्चे ने क्या सीखा एवं कहाँ उसके साथ कार्य करने की आवश्यकता है। सतत् आकलन, शिक्षक अपने अध्यापन के समय अवलोकन या अन्य उपकरणों की सहायता से कर सकता है जिससे प्राप्त फीडबैक का उपयोग वह अपनी शिक्षण विधि को सुधारने हेतु करता है। नियमित आकलन एक समय विशेष के अंतराल के बाद किया जाता है जिसमें शिक्षक विभिन्न तकनीक एवं उपकरणों का उपयोग कर फीडबैक प्राप्त करते हैं। यह फीडबैक शिक्षक के अलावा पालकों एवं बच्चों के लिए भी होता है।

1.3.2 व्यापक (Comprehensive)–

व्यापकता से आशय बच्चे के समस्त कौशलों/गुणों के विकास से है जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास भी सम्मिलित है जो एक अच्छे नागरिक के लिए आवश्यक होता है। इन गुणों को हम दो भागों में बाँट सकते है। संज्ञानात्मक एवं सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र। पूर्व में कक्षा उन्नति का आधार केवल पाठ्यपुस्तक केंन्द्रित होता रहा है जो संज्ञानात्मक क्षेत्र तक सीमित रहा। वर्तमान में इसमें बच्चों के सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र जैसे–बच्चों की रूचि, अभिवृत्ति सृजनशीलता, खेलकूद, योग आदि को सम्मिलित किया गया है। इन गुणों का विकास धीमी गति से होता है तथा वांछित परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है। व्यापक आकलन, अवलोकन, चर्चा, साक्षात्कार आदि के माध्यम से किया जा सकता है।

1.3.3 मूल्यांकन (Evaluation)–

मूल्यांकन, कक्षा अधिगम प्रक्रिया के साथ–साथ बच्चों के सीखने की गति, अवधारणा, ज्ञान, अभिवृत्ति, कौशल, व्यवहार, अनुभव, आदि को जानने के लिए योजनाबद्ध रूप से साक्ष्यों का संकलन,

विश्लेषण, व्याख्या एवं सुझाव देने की प्रक्रिया है। साक्ष्यों का यह संकलन कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के समय शिक्षकों द्वारा उपयोग में लाए गए उपकरणों के माध्यम से किया जाता है क्योंकि मूल्यांकन के आधार पर आवश्यक सुधार कर उपलब्धि स्तर को बढ़ाया जा सकता हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया जितनी बेहतर होगी विकास की गति उतनी ही बेहतर होगी

1.4 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का आशय यह नहीं है (CCE doesn't mean)–

- यह परीक्षा का पर्याय नहीं है और न ही बच्चों का नियमित परीक्षण है।
- बच्चों को ग्रेड या अंक देना, फेल–पास का सटिर्फिकेट देना।
- बच्चों को नाम देना जैसे धीमी गति से सीखने वाला, कमज़ोर, होशियार, समस्या मूलक विद्यार्थी आदि।
- बच्चों को भय व दबाव में अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
- बच्चे की प्रगति की तुलना अन्य बच्चे से करना।

1.5 आकलन व मूल्यांकन में अंतर (Difference between Assessment and Evalvation)–

आकलन– आकलन, मूल्यांकन करने की एक प्रक्रिया है जो निरंतर चलती है इसे छोटे–छोटे उद्देश्यों के लिए किया जाता है। आंकलन से निरंतर सुधार (उपचारात्मक शिक्षण) किया जाता है।

मूल्यांकन– विशिष्ट उद्देश्यों के लिए आकलन के आधार पर लिया गया निर्णय मूल्यांकन है। मूल्यांकन द्वारा शिक्षकों, पालकों एवं बच्चों को फीडबैक प्राप्त होता है। यह कक्षा उन्नति का भी आधार होता है।

1.6 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य–

- विभिन्न विषयों में निश्चित समय उपरांत बच्चों की प्रगति जानना।
- बच्चों के व्यवहार में हुए परिवर्तनों का पता लगाना।
- बच्चे की व्यक्तिगत और विशेष जरूरतों का पता लगाना।
- अधिक उपयुक्त तरीकों के आधार पर अध्यापन और सीखने की स्थितियों की योजना बनाना।
- कोई बच्चा क्या कर सकता है और क्या नही, उसकी किन चीजों में विशेष रुचि है, वह क्या करना चाहता है और क्या नहीं, इन सबके प्रति समझ बनाना और बच्चे की मदद करना।
- कक्षा में चल रही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना।
- बच्चे की प्रगति के प्रमाण तय कर पाना, जिन्हें अभिभावकों और दूसरों तक सम्प्रेषित किया जा सके।
- बच्चों में परीक्षा के प्रति व्याप्त भय व दबाव को दूर करना और उन्हें स्वआकलन हेतु प्रोत्साहित करना।
- प्रत्येक बच्चे को सीखने और विकास में मदद करना।
- सृजनशीलता को बढ़ावा देना।

1.7 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के सिद्धान्त (Principles of CCE)-

- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन तथा सीखने की प्रक्रिया साथ–साथ चलता है, जिसमें बच्चे को सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने के बाद ही मूल्यांकन किया जाता है।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में बच्चे की प्रगति की तुलना उसके स्वयं की पिछली प्रगति से की जाती है न कि अन्य बच्चों की प्रगति से।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में बच्चे के सीखने की गति एवं क्षमता के अनुसार अलग–अलग गतिविधियों का उपयोग किया जाता है।

*****

मूल्यांकन के क्षेत्र एवं प्रकार
(Areas and Types of Evalutaion)

2

2.1 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के क्षेत्र –

1. संज्ञानात्मक क्षेत्र
2. सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र

2.1.1 संज्ञानात्मक क्षेत्र (Scholastic Area)–

संज्ञानात्मक क्षेत्र के अंतर्गत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर पढ़ाए जाने वाले समस्त विषयों का मूल्यांकन किया जाता है, जो बच्चों के मानसिक विकास में मदद करते हैं। पढ़ायें जाने वाले विषयों का आकलन विभिन्न उपकरणों के माध्यम से किया जाता है। जैसे– लिखित, मौखिक, प्रोजेक्ट, प्रदत्त कार्य आदि। इसका उद्देश्य बच्चों के सीखने की गति, क्षमता एवं कठिनाइयों का पता लगाकर आवश्यकतानुसार बच्चे को सीखने के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध कराना है। संज्ञानात्मक क्षेत्र का आकलन दो प्रकार से किया जाता है– फॉरमेटिव आकलन व समेटिव आकलन।

2.1.2 सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र (Co-Scholastic Area)–

इस क्षेत्र के अंतर्गत सहशैक्षिक क्रियाकलाप अर्थात् खेलकूद, योग, साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, कार्यानुभव, सहयोग, अनुशासन, अभिवृत्ति आदि क्षेत्रों को शामिल किया जाता है। जिसके माध्यम से बच्चों के मानसिक पक्ष के साथ–साथ उनके भावनात्मक व मनोगत्यात्मक पक्ष जैसे– सृजनात्मक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक आदि के विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है।

सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र		
अ. सह–शैक्षिक	**ब. व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुण**	**स. शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य**
1. साहित्यिक 2. सांस्कृतिक 3. सृजनात्मक 4. खेलकूद, योग,	1. नियमितता 2. समयबद्धता 3. स्वच्छता 4. अनुशासन / कर्त्तव्यनिष्ठ	वर्ष में एक बार प्रत्येक बच्चे का शासकीय चिकित्सक द्वारा

2.2.1 संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन (Evaluation of Scholastic Area)–

अ. रचनात्मक आकलन (Formative Assessment)-

रचनात्मक आकलन, कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, जो सतत् रूप से औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में किया जाता है। कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को सीखने–सिखाने के पर्याप्त अवसर दिए जाते हैं जिससे बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण कर सकें। बच्चे अपने

ज्ञान का निर्माण स्वयं गतिविधियों के माध्यम से, अपने अनुभव एवं गलतियों के निरंतर सुधार से करते हैं। सीखने सिखाने की इस प्रक्रिया में शिक्षक को यह जानना बहुत आवश्यक है कि **बच्चे कितना सीख रहे हैं, सीखने की प्रगति कैसी है, बच्चे को कहाँ मदद की आवश्यकता है ?** अतः शिक्षक कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान विभिन्न उपकरणों के माध्यम से बच्चे का सतत् आकलन करता है, आकलन के दौरान शिक्षक न सिर्फ आवश्यकतानुसार बच्चे का उपचारात्मक शिक्षण करता है बल्कि अपने स्वयं की भी शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करता है।

शिक्षक अपने स्वयं के फीडबेक हेतु, माता–पिता फीडबेक देने एवं बच्चों की प्रगति जानने के लिए फारमेटिव आकलन के कुछ बिंदुओं को मूल्यांकन पंजी में नोट करता है जिसके वेटेज को प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में सम्मिलित किया जाता है। यह वेटेज प्राथमिक स्तर पर 50 प्रतिशत एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर 40 प्रतिशत है। यह वेटेज एक निश्चित अवधि पश्चात कम–से–कम पाँच उपकरणों के माध्यम से निकाला जाता है, जिसमें बच्चे ने अच्छा प्रयास किया।

ब. योगात्मक आकलन (Summative Assessment)-

योगात्मक आकलन प्रत्येक सेमेस्टर के अंत में किया जाता है। यह आकलन पेपर पेंसिल (लिखित) उपकरण की सहायता से निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर किया जाता है। जिसके लिए प्रश्न पत्र का उपयोग किया जाता है। शिक्षक प्रश्न बनाते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि प्रश्न–पत्र कौशल आधारित हो, रटने पर न हो, तथा बच्चों के अनुभव, कल्पना–शक्ति, सृजनशीलता, तर्क करने, स्वतंत्र विचारों को रखने के लिए अवसर प्रदान करता हो। प्रश्न बनाते समय प्रश्नों के शैक्षिक उद्देश्यों को भी ध्यान में रखा जाए अर्थात् प्रश्न ज्ञान, अवबोध, कौशल एवं अनुप्रयोग पर आधारित हों जिसमें वस्तुनिष्ठ, अतिलघुत्तरीय, लघुत्तरीय, दीर्घउत्तरीय प्रकार के प्रश्न शामिल हो (कक्षावार संदर्शिका में देखें)। योगात्मक आकलन में D एवं E ग्रेड प्राप्त बच्चों का उपचारात्मक शिक्षण का प्रावधान होता है। उपचारात्मक शिक्षण के लिए प्रथम सेमेस्टर के पश्चात् 15 दिन का समय होगा तथा द्वितीय सेमेटर में स्कूल खुलने पर (जून माह) होगा। उपचारात्मक शिक्षण पश्चात् ही बच्चे को कक्षान्नोति दी जाएगी।

नोट– द्वितीय सेमेस्टर में उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था कक्षा 3री से 7वीं तक के बच्चों पर लागू होगी।

2.2 संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन कब करें ?

प्रथम सेमेस्टर (जून से नवम्बर)		द्वितीय सेमेस्टर (दिसम्बर से अप्रैल)	
सितम्बर के अंतिम सप्ताह	प्रथम फॉरमेटिव दस्तावेजीकरण	जनवरी के अंतिम सप्ताह	द्वितीय फॉरमेटिव दस्तावेजीकरण
नवम्बर के अंतिम सप्ताह	प्रथम समेटिव आकलन	मार्च के द्वितीय सप्ताह	तृतीय फॉरमेटिव दस्तावेजीकरण
		अप्रैल के द्वितीय सप्ताह	द्वितीय समेटिव आकलन

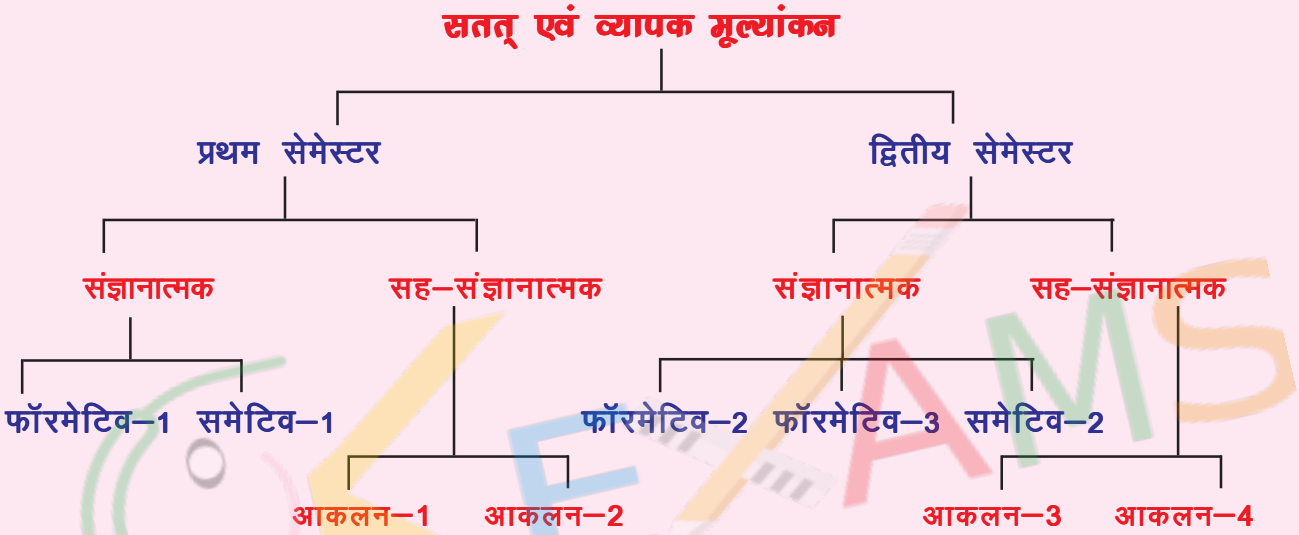

1.3 संज्ञानात्मक क्षेत्र का (Scholastic Area)- मूल्यांकन कैसे करें ?

- प्रत्येक सत्र में दो सेमेस्टर होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर में संज्ञानात्मक एवं सहसंज्ञानात्मक दोनों क्षेत्रों में मूल्यांकन किया जाएगा।

- प्रथम सेमेस्टर में संज्ञानात्मक क्षेत्र में विषयवार एक फॉरमेटिव एवं एक समेटिव आकलन होगा। **द्वितीय सेमेस्टर में दो फॉरमेटिव एवं एक समेटिव आकलन होगा।**
- संज्ञानात्मक क्षेत्रों का मूल्यांकन अंक आधारित होगा। प्रत्येक सेमेस्टर में विषयवार अंक 100–100 होंगे। अर्थात् दोनों सेमेस्टर मिलाकर कक्षा तीसरी से पाँचवी तक 800 अंक एवं कक्षा छठवीं से आठवीं तक 1200 अंक होंगे।

- प्रत्येक विषय के लिए फॉरमेटिव एवं समेटिव मूल्यांकन का अधिभार अलग–अलग होगा। दोनों के अंकों को जोड़कर सेमेस्टर के अंक तय किए जा सकेंगे। कक्षावार विषयवार अंक विभाजन निम्न प्रकार से है।

कक्षा	अंक	
	Formative	Summative
तीसरी से पाँचवीं	50	50
कक्षा 6 से कक्षा 8	40	60

1.4 संज्ञानात्मक मूल्यांकन में ग्रेडिंग प्रणाली (Grading)-

ग्रेड का आशय बच्चों को फेल या पास करना नहीं है बल्कि एक–एक अंक के लिए बच्चों एवं पालकों के मध्य होने वाली प्रतिस्पर्धा को कम कर बच्चे की स्थिति अनुरूप आवश्यक मदद सुनिश्चित कर तनाव को दूर करना है। सी.सी.ई. का उद्देश्य सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है। संज्ञानात्मक क्षेत्र के लिए ग्रेड निम्नानुसार होगें–

तीसरी से आठवीं (प्राप्तांकों का प्रतिशत)	ग्रेड
81 से 100	A
66 से 80	B
51 से 65	C
36 से 50	D
36 से नीचे	E

2.3.1 सह-संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन-

सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन सूचकों के आधार पर किया जाएगा। आकलन तीनों क्षेत्रों में पृथक– पृथक गतिविधि करवा कर करना होगा। आकलन करने से पूर्व यह सुनिश्चित करें कि इस क्षेत्र के लिए पर्याप्त सीखने के अवसर बच्चों को दिया जाए। उदाहरण–मानलो यदि आपको कक्षा पांचवी के बच्चों का सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र में आकलन करना है तब हमें तीनों क्षेत्रों पर कार्य करना होगा।

1. **सहशैक्षिक क्षेत्र**– सृजनात्मकता सांस्कृतिक साहित्यिक खेलकूद योग।

2. **व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुण–** स्वच्छता, समयबद्धता, नियमितता, अनुशासन, अभिवृत्ति, कार्यानुभव।

3. **शारीरिक शिक्षा–** वर्ष में एक बार शिक्षा स्वास्थ्य कार्यकर्ता अथवा चिकित्सक की मदद से शिविर आयोजित कर बच्चों का शारीरिक परीक्षण कराएँ तथा योग्य उपाय करें।

उपरोक्त प्रत्येक सेमेस्टर के लिए प्रत्येक सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र से दो–दो गतिविधि करवाना आवश्यक होगा। क्षेत्रों के आकलन हेतु शिक्षक समयानुसार गतिविधि कराकर बच्चों को सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराएँ। पाठ के साथ–साथ बच्चों को सहशैक्षिक क्षेत्रों के विकास हेतु पर्याप्त अवसर दिए जा सकते है। जैसे– हिन्दी के पाठ पढ़ाते समय साहित्यिक सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक क्षेत्र के लिए गीत गाना, किसी विषय पर वादविवाद करना, अपने विचारों को रखना, कहानी लिखना, अभिनय करना, कहानी को डायलॉग में बदलना, चित्र बनाना आदि गतिविधियाँ कक्षा अध्यापन के दौरान करवाया जा सकता है।

व्यक्तिगत एवं सामाजिक जिसके क्षेत्र का संबंध बच्चे के व्यवहार परिवर्तन से है। विकास हेतु विभिन्न गतिविधियों के साथ–साथ एवं कक्षा अधिगम प्रक्रिया के दौरान अवसर उपलब्ध कराया जाए। क्षेत्र का विकास धीमी गति से होता है अतः शिक्षक को धैर्य रखना आवश्यक है।

2.3.3 सह-संज्ञानात्मक क्षेत्र के उपकरण-

सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र के उपकरण पोर्टफोलियो, चैक लिस्ट, अवलोकन, साक्षात्कार, मौखिक प्रश्न आदि हो सकते है। इसमें सामाजिक एवं व्यक्तिगत गुणों के विकास के लिए शिक्षकों के द्वारा किया गया अवलोकन सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। (शिक्षक बच्चों के सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र का रिकार्ड, शिक्षक डायरी प्रोफाइल, मूल्यांकन पंजी, पोर्टफोलियों मे रखे।)

2.3.4 सह-संज्ञानात्मक क्षेत्र का ग्रेड-

जिसके लिए संज्ञानात्मक क्षेत्र की तरह इसमें भी पाँच ग्रेड होगा–A, B, C, D, E । इस क्षेत्र का मूल्यांकन अंकों के आधार पर न कर सीधे ग्रेड के रूप में होगा। शिक्षक कोई भी गतिविधि करवाने से पूर्व आकलन बिंदु का निर्धारण तय करना होगा। हर क्षेत्र के लिए आकलन बिंदु अलग–अलग भी हो सकता है। उदा.– "कला" के लिए सूचक– 1. रंगों का चयन, 2. समानुपातिक आकार, 3. सहभागिता, 4. कल्पनाशीलता, 5. सृजनशीलता 6. स्वअनुशासन 7. स्वच्छता आदि (शिक्षक चाहे तो अन्य सूचक भी तैयार कर सकते है।) उपरोक्त सूचकों में कोई भी चार सूचकों का निर्धारण शिक्षक पहले से ही तय कर ले। यदि बच्चा सभी चार सूचकों को पूर्ण करता है तो ग्रेड **A,** तीन सूचकों को पूरा करने पर **B,** यदि दो को करता है तो **C,** यदि बच्चा एक करता है तो उसे **D,** ग्रेड प्राप्त होगा और एक भी नहीं करने पर **E,** ग्रेड प्राप्त होगा।

2.3.2 सह-संज्ञानात्मक क्षेत्र का आकलन कब करें-

सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र की गतिविधियाँ आप कक्षा में शिक्षण के साथ–साथ संपन्न कर सकते है। प्रथम कालखंड के सामान्य मुद्दों के साथ जोड़ कर इसे और भी प्रभावी बना सकते है। सप्ताह के प्रत्येक शनिवार को भी यह कार्य किया जा सकता है।

कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान भी आप सह संज्ञानात्मक क्षेत्र के लिए आकलन कर सकते है। जैसे– शिक्षक हिन्दी विषय में एक कहानी का अध्यापन किया। अध्यापन कार्य के पश्चात् बच्चों को एक विषय देकर कहानी लिखने को कहें। बच्चों द्वारा किए गए कार्य के आधार पर सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र का आकलन कार्य शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है।

आकलन प्रतिदिन की गतिविधियों के साथ स्वाभाविक रूप से सुविधानुसार किया जाना चाहिए। उचित होगा कि सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों के आकलन सभी शिक्षक मिलकर करें क्योंकि इससे व्यक्तिनिष्ठता कम होगी, किसी तरह का संदेह यदि हुआ तो दूर होगा, एक शिक्षक पर कार्यभार कम होगा, कार्य सरल होंगे, तथा रिकार्ड व्यवस्थित रखना आसान होगा। कुछ और बातें जो सतत् और व्यापक मूल्यांकन की ओर ध्यान आकर्षित करती है संक्षेप में इस प्रकार है– अगर हमें मूल्यांकन सावधानीपूर्वक लागू करना है तो यह शिक्षक से कुछ समय की भी माँग करता है कि वह सावधानी और कुशलता से रिकार्ड रखें कि यह आकलन सीखने और सिखाने की प्रक्रिया का सार्थक दस्तावेज बन जायें। अन्ततः आकलन में विश्वसनीयता को विकसित करने और बनाये रखने की जरूरत है जिसे वे प्रतिपुष्टिकरण प्रदान करने की भूमिका को सार्थक रूप से निभा सके।

2.4 समेकित ग्रेड (Inteigrated Grade)-

संज्ञानात्मक एवं सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र को जोड़कर समेकित ग्रेड बनाया जाएगा। संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन अंकों के आधार पर एवं सहसंज्ञानात्मक क्षेत्रों का मूल्यांकन ग्रेड के आधार पर किया गया है। संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन प्रतिशत में अर्थात् मात्रात्मक रूप में किया जाता है। दूसरी तरफ सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन ग्रेड अर्थात् गुणात्मक रूप में किया जाता है। अतः दोनों को समेकित करने के लिए उसे सजातीय बनाने हेतु अधिभार दिया गया है, जो निम्नानुसार है–

ग्रेड / अधिभार	संज्ञानात्मक	सहसंज्ञानात्मक
A	5	5
B	4	4
C	3	3
D	2	2
E	1	1

ग्रेड का विस्तार-

उदा:– यदि एक बच्चे को संज्ञानात्मक क्षेत्र में **C** ग्रेड एवं सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र में **A** ग्रेड मिला है तो बच्चे का समेकित ग्रेड होगा :–

(संत्रात संज्ञानात्मक क्षेत्र का ग्रेड+संत्रात सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र का ग्रेड / 2 = 3+5 / 2=4 अर्थात् बच्चे का समेकित होगा **B** ग्रेड)

(**नोट**– यह प्रक्रिया संज्ञानात्मक एवं सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र को समेकित करने हेतु की गई है। जिसे अंतिम परिणाम बनाते समय उपयोग में लाया जाना है।)

2.5 उपचारात्मक शिक्षण-

पूर्व के पृष्ठ में कई जगह उचारात्मक शिक्षण का ज़िक्र किया गया है। हम यहाँ यह समझने का प्रयास करेंगे कि उपचारात्मक शिक्षण क्या है, क्यों करें, व कब करें, कैसे करें।

2.5.1 उपचारात्मक शिक्षण कब व कैसे ? (Remedial Teaching- When & How)-

उपचारात्मक शिक्षण संज्ञानात्मक तथा सह–संज्ञानात्मक दो क्षेत्रों के लिए किया जा सकता है।

शिक्षक कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान अवलोकन कर, प्रश्न पूछकर, चर्चा कर, कापियों को देखकर, यह पता करें कि बच्चे किन–किन क्षेत्रों में सीख नहीं पा रहे हैं। यदि सीख नहीं पा रहे हैं तो क्या कारण है। संभवतः बच्चे का कक्षा में ध्यान न रहना, गलती होने पर शिक्षक द्वारा डाँटने, बच्चों की चंचलता, शिक्षक की भाषा न समझ पाना, बोलते व लिखते समय कठिनाई, कक्षा में लंबी अनुपस्थिति, संख्या ज्ञान का अभाव, प्रश्नों को समझ न पाना, उत्तर लिखते समय पर्याप्त समय न होना, उत्तर लिखने में हड़बड़ी करना एवं विषय में रुचि न होना आदि कारणों से बच्चे त्रुटियाँ करते है। शिक्षक बच्चों के न सीख पाने के कारणों को गहराई तक जाकर समझे तद्उपरांत उपचारात्मक शिक्षण दें।

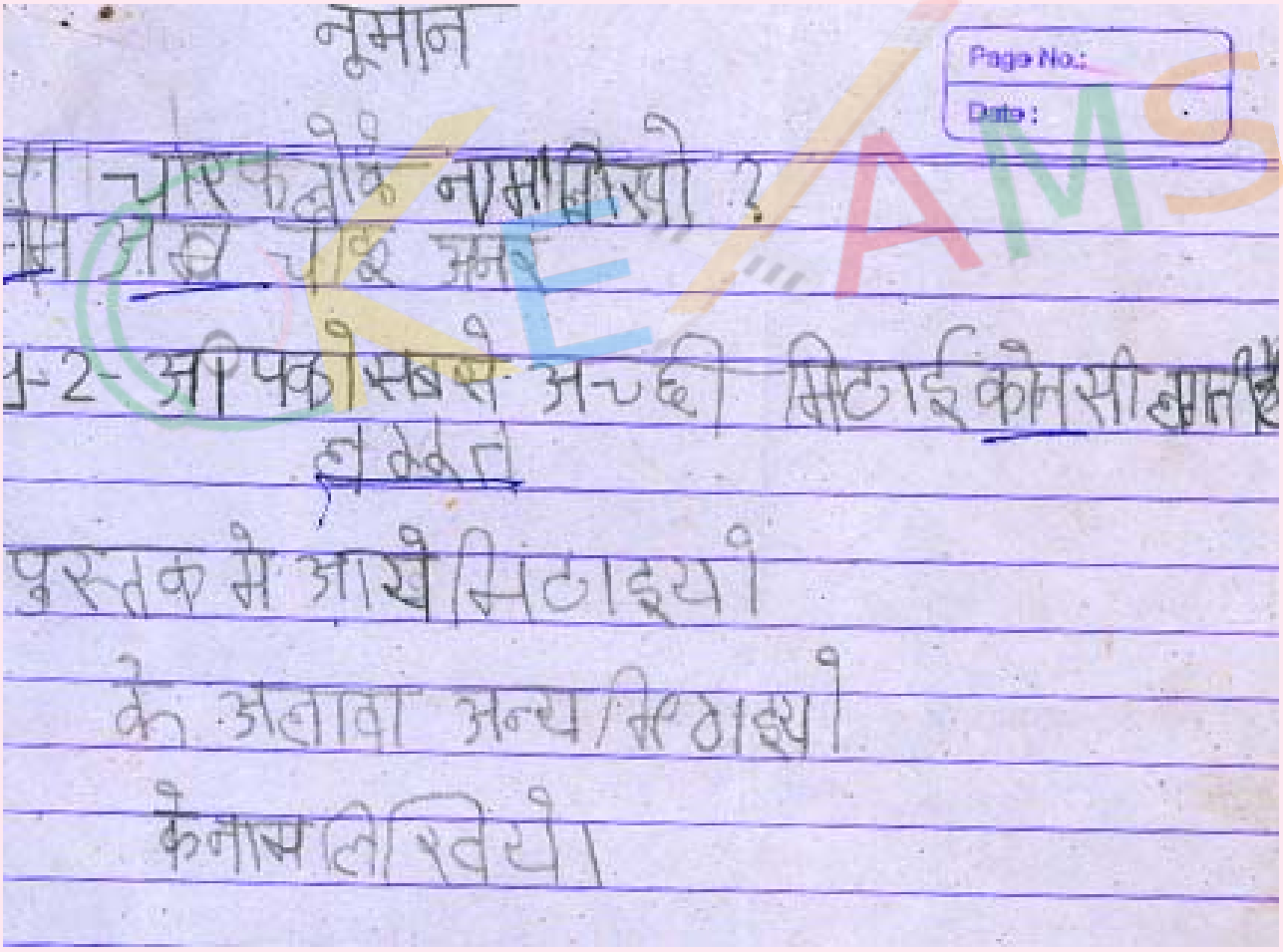

(i) उदाहरण : दिये गए भाषा के उत्तर पेपर का अवलोकन करें। इस पेपर में पहले यह देखें कि बच्चे को क्या–क्या आता है और क्या–क्या नहीं?

बच्चे को क्या–क्या आता है?	बच्चे को क्या–क्या नहीं आता है?
1. अक्षर ज्ञान है।	1. मात्राओं का ज्ञान नहीं है। जैसे– कौन को कोन आम को अम अनार को अनर लिखना
2. शब्द ज्ञान है।	2. उच्चारण करना नहीं आता है।
3. देखकर लिख सकता है।	3. शुद्ध लेखन नहीं कर पाता है।
4. मिठाइयों के नामों से परिचित है।	4. मिठाइयों के नामों को सही–सही नहीं लिख पाता है।

शिक्षा द्वारा उपचारात्मक शिक्षण–

1. शिक्षक बच्चे की मात्राओं की ओर ध्यान दें।
2. बोलते समय उच्चारण सही करवाएँ।
3. पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य बाल साहित्य पढ़ने हेतु प्रेरित करें।
4. नियमित रूप से शुद्ध लेखन, क्लोज परीक्षण एवं किसी भी मनपंसद विषय पर **जैसे–** नानी, सायकल, बैल, भँवरा, बाँटी आदि पर पाँच लाईन लिखने के लिए दें।

(ii)उदाहरण– दिये गए गणित के उत्तर पेपर का अवलोकन करें। इस पेपर में पहले यह देखें कि बच्चे को क्या–क्या आता है और क्या–क्या नहीं?

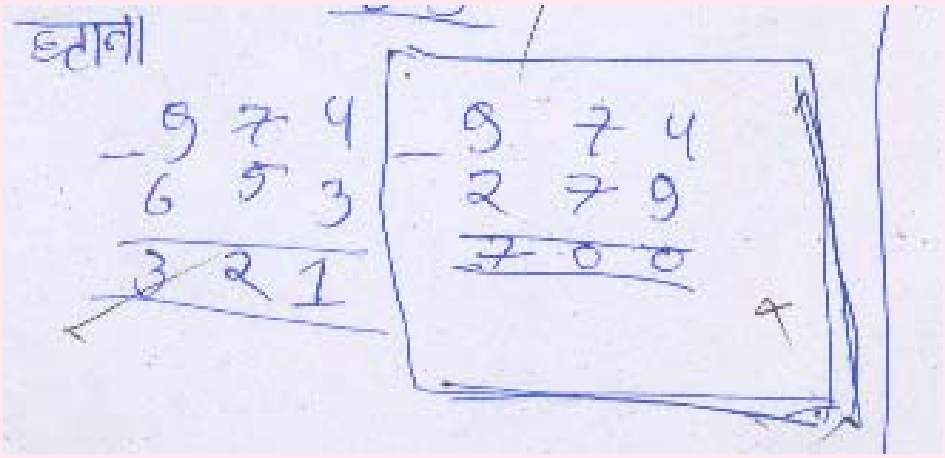

बच्चे को क्या–क्या आता है?	बच्चे को क्या–क्या नहीं आता है?
1. अंकों का ज्ञान है। 2. छोटी एवं बड़ी संख्या का ज्ञान है। 3. बड़ी संख्या से छोटी संख्या को घटाना आता है। 4. स्थानीय–मान के आधार पर संख्याओं को जमाता है।	1. छोटी संख्या से बड़ी संख्या घटाना नहीं आता है। 2. उधार की प्रक्रिया को नहीं समझ पाता है।

1. विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से शिक्षक उधार की प्रक्रिया को समझाएँ।

मूल्यांकन करते समय निम्न बातों पर ध्यान दें :-

- मूल्यांकन इस प्रकार हो कि बच्चे स्कूल में पढ़ाए ज्ञान को बाहरी जीवन से और अपने अनुभवों से जोड़ें।
- बच्चे अपनी सृजनात्मकता का विकास कर पाएँ।
- पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो, बच्चे स्वतंत्र रूप से अपनी अभिव्यक्ति कर सकें।
- मूल्यांकन तनावपूर्ण एवं बोझिल न हो बल्कि सहज एवं आनंददायी हो।
- शिक्षक केवल उन्हीं उत्तरों को सही नहीं मानें जो उन्होंने कक्षा में बताएँ हैं या बोर्ड पर लिखवाएँ हैं, बल्कि बच्चों द्वारा दिये गये उत्तरों के पीछे के तर्क व सोच को ध्यान में रखकर मूल्यांकन करें।
- मूल्यांकन बच्चों को सफल या असफल घोषित करने के लिए ही नहीं किया जाना चाहिए। बच्चे का मूल्यांकन इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर करें कि बच्चे ने क्या सीखा क्या नहीं सीख पाया। सीखने के दौरान हो रही कठनाईयों को पता कर बच्चे के लिए उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करें।

सह–संज्ञानात्मक क्षेत्रों का मूल्यांकन

निर्देश– बच्चे को प्रत्येक सह–शैक्षिक क्षेत्र की कम से कम दो गतिविधि में भाग लेना अनिवार्य है। भाग ली जाने वाली गतिविधि का प्रत्येक बच्चे का अभिलेख रखा जाए।

क्रमांक	सह–शैक्षिक क्षेत्र	मूल्यांकन बिन्दु/ग्रेड देने का तरीका	गतिविधि	कक्षा 1,2	कक्षा 3,4,5	कक्षा 6,7,8	मूल्यांकन उपकरण	रिपोर्टिंग
1	साहित्यिक	1. सहभागिता	गीत/कहानी/अंताक्षरी	✔	✔		अवलोकन, चैकलिस्ट, पोर्टफोलियो,	मासिक 5 पाइंट ग्रेड में – ए ग्रेड – उत्कृष्ट बी ग्रेड – उत्तम सी ग्रेड – अच्छा डी ग्रेड – सामान्य ई ग्रेड – सुधार योग्य
		2. विषायानुरूप प्रस्तुति	भाषण/वाद–विवाद	–	✔	✔		
		3. आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति	निबंध/पत्र/कविता/रिपोर्ट लेखन	–	✔	✔		
		4. मौलिकता	पुस्तकालय का उपयोग	–	✔	✔		
2	सांस्कृतिक	1. सहभागिता	वादन	–	✔	✔		
		2. विषायानुरूप प्रस्तुति	गायन	–	✔	✔		
		3. आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति	नृत्य/लोकनृत्य	✔	✔	✔		
		4. मौलिकता	अभिनय–एकल/सामूहिक	–	✔	✔		
3	सृजनात्मक	1. सहभागिता	कागज, मिट्टी आदि से विभिन्न आकृतियाँ व खिलौने बनाना	✔	✔	–		
		2. रंग संयोजन	ड्राइंग, पेंटिंग	✔	✔	✔		
		3. कल्पनाशीलता/रूपरेखा	मेंहदी, रंगोली	–	✔	✔		
		4. मौलिकता	सिलाई–कढ़ाई–बुनाई	–	–	✔		
4	खेलकूद/योग	1. सहभागिता	**आउटडोर**– कबड्डी, खो–खो, दौड़, लम्बी/ऊँची कूद, रस्सी कूद, हॉकी, फुटबाल, क्रिकेट, बेडमिंटन व स्थानीय खेल	✘	✔	✔		
		2. उत्साह/टीम/खेल भावना						
		3. स्टेमिना	**इनडोर**– कैरम लूडो, शतरंज व स्थानीय खेल	✔	✔	✔		
		4. मौलिकता	कब– बुलबुल, स्काउट–गाइड	–	✔	✔		
5	कार्यानुभव	1. सहभागिता	बागवानी					
		2. कार्य के प्रति रूचि	विद्यालय/कक्षा/परिसर की स्वच्छता					
		3. अनुशासन						
		4. सहयोग की भावना						

ग्रेड देने का तरीका –

ग्रेड–ए – उक्त चारों मूल्यांकन बिन्दु पाए जाने पर

ग्रेड–बी – उक्त चार में से तीन मूल्यांकन बिन्दु पाए जाने पर

ग्रेड–सी – उक्त चार में से दो मूल्यांकन बिन्दु पाए जाने पर

ग्रेड–डी – उक्त चार में से एक मूल्यांकन बिन्दु पाए जाने पर

ग्रेड–ई – नहीं करने पर

व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुण

निर्देश– प्रत्येक बच्चे के व्यक्तिगत व सामाजिक गुणों पर ग्रेड देने हेतु बनाए गए आधार का अभिलेख रखा जाए।

क्र.	व्यक्तिगत व सामाजिक गुण	गतिविधि	कक्षा			मूल्यांकन उपकरण
			1,2	3,4,5	6,7,8	
6	नियमितता एवं समयबद्धता	प्रतिदिन शाला में उपस्थित होना, सभी कालखण्डों में उपस्थित रहना	✔	✔	✔	अवलोकन, उपस्थिति पंजी
		समय पर शाला आना जाना		✔	✔	अवलोकन, चैकलिस्ट
		शालाकार्य/ गृहकार्य समय पर पूर्ण करना		✔	✔	
7	स्वच्छता	ड्रेस, नाखून, बाल, दांत, आंख, नाक, कान स्वच्छ रखना	✔	✔	✔	अवलोकन, चैकलिस्ट
		पुस्तकें–कापी कवर चढ़ाकर बैग में व्यवस्थित रखना		✔	✔	
8	अनुशासन/ कर्तव्यनिष्ठा	शिक्षक द्वारा सौंपे गए कार्य पूर्ण करना		✔	✔	अवलोकन, चैकलिस्ट
		शाला/कक्षा व्यवस्थित व स्वच्छ रखना		✔	✔	
		जूते/चप्पल व अन्य सामग्री निर्धारित स्थान पर रखना	✔	✔	✔	
		दूसरों से लड़ना–झगड़ना नहीं/शाला नियमों का पालन		✔	✔	
9	सहयोग की भावना	शिक्षकों के प्रति सहयोग			✔	अवलोकन, चैकलिस्ट, पोर्टफोलिया
		सहपाठियों के प्रति सहयोग			✔	
		अन्यों के प्रति (माता–पिता, बड़े/बुजुर्ग, समाज आदि)			✔	
10	नेतृत्व की क्षमता	खेलकूद, सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि गतिविधियों के दौरान नेतृत्व करना			✔	अवलोकन, रेटिंग, स्केल, पोर्टफोलियो
		कक्षा मॉनीटर, टीम लीडर/केप्टन की भूमिका निर्वहन			✔	
11	अभिवृत्ति	शिक्षकों व बड़ों के प्रति सम्मान			✔	अवलोकन, चैकलिस्ट, पोर्टफोलियो
		सहपाठियों व अन्य बच्चों के प्रति सम्मान			✔	
		अध्ययन के प्रति रुचि			✔	
		शाला व सार्वजनिक सम्पत्ति के प्रति सुरक्षा भावना		✔	✔	

कक्षा अधिगम प्रक्रिया एवं आकलन
(Teaching Learning Process and Assessment)

3

3.1 कक्षा अधिगम प्रक्रिया एवं आकलन–

आकलन एवं कक्षा अधिगम प्रक्रिया दोनों साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें स्पष्ट अंतर नहीं किया जा सकता। एक शिक्षक पढ़ाने के पूर्व अपने बच्चे का पूर्व ज्ञान जानने के लिए आकलन करता है, पढ़ाते समय भी एवं पढ़ाने के बाद भी आकलन कर यह जानने का प्रयास करता है कि उसके बच्चे को क्या–क्या आता है तथा क्या–क्या नहीं आता है यदि नहीं आता है तो उसके क्या कारण हैं। इन कारणों का पता कर बच्चे को उसकी क्षमतानुसार पुनः सीखने के अवसर प्रदान करता है। यदि हम भाषा की बात करें तो हम जानना चाहेंगे कि बच्चे कितना पढ़ पाते हैं, कैसे पढ़ पाते हैं, रुक–रुक कर या प्रवाह में पढ़ते हैं, भाषा को सुनकर कितना समझते हैं, कितने आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कह पाते हैं, लिखित रुप में अपनी अभिव्यक्ति कर पाते हैं, आदि। आकलन से हमें बच्चों के सीखने की गति को सरसरी तौर से नहीं परंतु गहराई से समझना हैं जैसे–अगर वे ठीक से पढ़ नहीं पा रहें तो उसकी क्या वजह है? क्या वे कुछ अक्षरों को पहचानने में कमज़ोर हैं या उनमें शब्दों और वाक्यों को एक सार्थक इकाई के रूप में पढ़ने की आदत नहीं पड़ सकी या हिज्जे करके पढ़ने की आदत की वजह से अर्थ समझ नहीं पाते आदि। यह जानकारी शिक्षक के अपने उपयोग के लिए है। वे अपने बच्चों को समझें, उनके सीखने में आने वाली कठिनाइयों को पहचानें, इन कठिनाइयों को दूर करने के हल निकालें तथा तरह–तरह की गतिविधियों एवं अभ्यासों द्वारा या अन्य तरीकों से सीखने के लिए बच्चों को प्रेरित करें, अर्थात् आकलन के द्वारा शिक्षक बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में मदद करें, न कि मात्र उनकी उपलब्धियों को परखें।

नियमित आकलन से बच्चों में पढ़ाई का तनाव नहीं होता है।

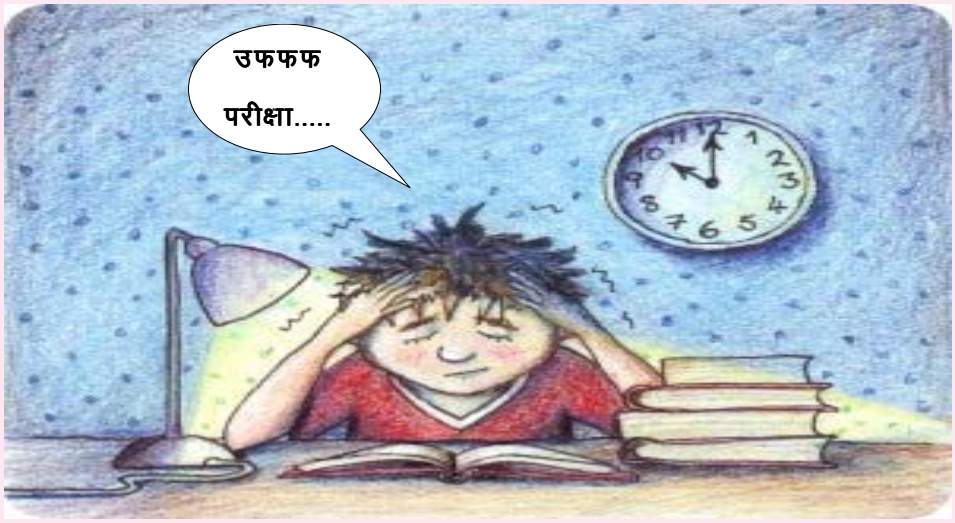

अब आप समझ गए होंगे कि क्या करना है, यानी बच्चों के स्तर को जानकर और उनकी कठिनाइयों को पहचान कर सुधारात्मक कदम उठाना है। मात्र नंबर देकर उन्हें किसी श्रेणी में डालकर संतुष्ट नहीं हो जाना है। **"आकलन की प्रक्रिया के अंतर्गत् शिक्षक बच्चों के नहीं सीख पाने के कारण ढूँढ़ें, उन पर विवरणात्मक टिप्पणी लिखें जिससे यह स्पष्ट होगा कि सीखने–सिखाने की पिछली प्रक्रिया से बच्चों ने क्या सीखा और आगे की सीखने–सिखाने की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए।"**

आकलन की प्रक्रिया की एक और विशेषता यह है कि हम प्रत्येक बच्चे की प्रगति की तुलना उसकी अपनी पिछली स्थिति से करें, दूसरे बच्चों की प्रगति से नहीं। इसके पीछे कारण यह है कि सभी बच्चों के सीखने की गति एवं समझ विकसित करने का समय एक–सा नहीं होता। कुछ बच्चे पढ़ने–समझने और बोलने लगते हैं पर कठिन अवधारणा समय आने पर ही समझते हैं। कुछ बच्चे जल्दी समझ और सीख लेते हैं पर लिखने के प्रारंभिक दिनों में कठिनाई महसूस करते हैं परंतु ध्यान रहे कि हमें कुछ बच्चे अर्थात् जल्दी सीखने वाले बच्चों को ही नहीं सिखाना है बल्कि, हर एक बच्चे को सीखने के लिए प्रेरित करना है। अतः शिक्षक बच्चों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए सभी को सीखने के पर्याप्त अवसर दें।

3.2 बच्चे कैसे सीखते है?

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करते समय प्रत्येक शिक्षक को यह जानना आवश्यक है–

- बच्चे सीखते कैसे है, क्योंकि इसी आधार पर बच्चों में आकलन की प्रक्रिया सुनिश्चित की जाती है।
- सभी बच्चे सीख सकते हैं, यदि उन्हें उनकी गति से सीखने दिया जाए और सीखने के अपने तरीकों का अनुसरण करने दिया जाए।
- सीखना एक सतत् प्रक्रिया है जो सिर्फ विद्यालय में ही नहीं होता अधिक घर में भी चलता रहता है। अतः कक्षा में सीखने की प्रक्रिया को, घर के वातावरण के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
- प्राथमिक स्तर पर बच्चे ठोस अनुभवों, खेल, खोजबीन, बहुत–सी चीज़ों के साथ परीक्षण और बहुत सी गतिविधियों को वास्तविक रूप से करते हुए बेहतर और अधिक आसानी से सीखते हैं।

- प्राथमिक स्तर पर बच्चे एक–दूसरे के साथ अंतःक्रिया (खेलते, कूदते, हँसते, गाते) करते हुए बेहतर तरीके से सीख पाते हैं।
- सीखने के दौरान बच्चे बहुत सी गलतियाँ भी करते हैं जो उनके सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। गलतियाँ करके ही वे सीखते हैं।

3.2 आकलन योजना (Assessment Strategy)-

प्राथमिक कक्षाओं के लिए विकसित नए पाठ्यक्रम–नई शिक्षण पद्धति की भावना के अनुरूप आकलन को एक योजनाबद्ध तरीके से सभी शिक्षकों को करना चाहिए। इस योजना की रूपरेखा आपके स्थान विशेष की जरूरतों के अनुरूप कुछ इस प्रकार हो सकती है–

- शिक्षक वर्ष भर कक्षा के सभी बच्चों का, सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान, निरंतर अवलोकन करें और आवश्यकतानुसार सुधारात्मक प्रयास करते रहें।
- औपचारिक रूप से आकलन एवं दस्तावेज़ीकरण, वर्ष में निर्धारित समयानुरूप करें।
- आकलन गतिविधि आधारित तरीके से ही करें। बच्चों से तरह–तरह की गतिविधियों को कर उनके शैक्षिक स्तर की जानकारी प्राप्त करें।
- आकलन के दौरान शाला या कक्षा का माहौल अन्य दिनों की ही तरह बिलकुल सामान्य रहे। जिस सरल ढंग से सीखना–सिखाना चलता है– गतिविधि, बातचीत, प्रश्न–उत्तर, चर्चा, अवलोकन आदि वैसे ही आकलन चलता रहे।
- एक बार में सभी बच्चों को ध्यान से देखना और आकलन तथा सुधार की दृष्टि से बारीकियाँ नोट करना कठिन होगा, इसलिए शिक्षक एक बार में 5–6 बच्चों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। आकलन बच्चों को टोलियों में बिठा कर या अलग–अलग तरीके से किया जा सकता है। आकलन रिकार्ड करने के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक एक आकलन–रजिस्टर बनाएँ जिसमें कम–से–कम एक पन्ना तो हर बच्चे के लिए हो। यह रजिस्टर हमेशा शाला में रहे जिससे बच्चों के माता–पिता (जब चाहें बच्चों की प्रगति देख पाएँ।)

- हर बच्चे का रिकॉर्ड नोट करें जिसकी टिप्पणियाँ स्पष्ट, सटीक और विश्लेषणात्मक हों जिसमें बच्चों को सिखाने के प्रयासों के लिए उनका उपयोग हो सके। प्रत्येक चरण में सभी बच्चों के आकलन के बाद सुधार की दृष्टि से आकलन प्रपत्र में से महत्वपूर्ण जानकारी निकाली जाए जैसे, किस बच्चे को सीखने में कौन–सी कठिनाई आ रही है?
- आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर बच्चों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए उनके विकास के लिए पहले से अधिक प्रभावी योजना बनाई जाए जैसे, किन बच्चों को एक साथ बैठाकर सिखाया जा सकता है, किस तरह की गतिविधियाँ उनके लिए उपयुक्त होंगी, किस तरह से उन्हें आपस में सीखते हुए प्रोत्साहन दिलाया जा सकता है, आदि।
- इस तरह के आकलन में शिक्षक अपना एवं अपने द्वारा कराई जा रही शिक्षण–प्रक्रिया का भी आकलन करें और अपनी शिक्षण–प्रक्रिया में सुधार करके बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करें। इस तरह प्रत्येक चरण के आकलन के बाद सिखाने के तरीकों में और सीखने के अवसरों में लगातार सुधार हो।
- आकलन तथा टेस्ट के निष्कर्षों के आधार पर बच्चों के माता–पिता को देने के लिए एक प्रगति पत्रक बनाएँ। इस प्रगति पत्रक में शिक्षक आकलन और सत्रांत परीक्षा के आधार पर बच्चों की प्रगति का विवरण दें।
- आकलन के आधार पर अगली कक्षा के शिक्षक को जानकारी भी दी जाए।

आकलन योजना तैयार करते समय यह ध्यान रखना भी जरूरी है कि किन बिंदुओं को आधार मानकर आकलन किया जाए।

3.4 प्राथमिक स्तर पर बच्चों के सीखने का आकलन

प्राथमिक कक्षाओं में आकलन, सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा होता है जो हमें यह समझने में मदद करता है कि शिक्षण किस प्रकार का हो। अतः आकलन रोज की गतिविधियों के साथ स्वाभाविक रूप से किया जाना चाहिए। हम सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को एक जीवंत प्रक्रिया तभी बना सकते हैं जब हम बच्चों को सीखने के अधिक से अधिक अवसर दें और बच्चे अपने स्तर के अनुरूप सीख रहे हैं या नहीं? इस बात का सतत् आकलन करते चलें। आकलन के साथ–साथ जब हम उन

कठिनाईयों के बारे में पता करते चलेंगे जो बच्चों के सीखने में बाधक बन रही हैं, तभी हम सीखने की प्रक्रिया को सुधारने का प्रयास कर सकेंगे।

बच्चों का आकलन मात्र बच्चों का आकलन नहीं होता। जब शिक्षक कक्षा में आकलन करते हैं तो एक तरह से वे स्वयं का भी आकलन कर रहे होते हैं। यदि कक्षा के ज्यादातर बच्चे सीख रहे हैं तो निश्चित ही शिक्षक बधाई के पात्र हैं। यदि नहीं सीख पा रहे हैं तो शिक्षक को सोचना चाहिए कि बच्चों को सिखाने के तरीकों को और प्रभावी किस तरह बनाएँ।

आकलन बच्चों और शिक्षकों के बारे में ही कुछ नहीं कहता बल्कि पूरी शिक्षण प्रणाली के बारे में हमें बहुत कुछ बताता है। यदि कई शिक्षक यह पाते हैं कि भरसक प्रयास के बावजूद भी बच्चे कोई कौशल प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं तो पाठ्य–वस्तु के शिक्षण, प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम के विषय में सोचना आवश्यक होगा। इस तरह आकलन गुणात्मक सुधार की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। आकलन के आधार पर ही हम यह जान सकते हैं कि हम कहाँ तक पहुँचे हैं और अभी आगे कितनी दूर जाना है।

3.5 आकलन–सीखने का एक साधन

हमारा उद्देश्य है– सभी बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करना और प्रत्येक बच्चे की क्षमता, उम्र और स्तर को ध्यान में रखते हुए उसे एक निश्चित स्तर तक पहुँचाना। इस उद्देश्य को पूरा कर पाने के लिए हम आकलन को सीखने के एक साधन के रूप में देखते हैं। सिर्फ यह पता लगा लेना या जाँच कर लेना पर्याप्त नहीं है कि कितने बच्चों का शैक्षिक स्तर क्या है? आकलन के द्वारा बच्चों का आपस में सीखना–सिखाना, प्रभावी बनाना ही मुख्य उद्देश्य है। यानी कि आकलन को हम सीखने के उपकरण (Learning tool) के रूप में महत्व देते हैं, मात्र बच्चों की उपलब्धि स्तर जानने के उपकरण (testing tool) के रूप में नहीं।

सतत् आकलन के दौरान बच्चों ने कितना सीखा यह जानने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है। इनकी सहायता से यह पता चलता है कि बच्चा सीख रहा है या नहीं, सीखने की गति क्या है, यदि नहीं सीख पा रहा है तो कौन–कौन से कारण हैं, यह जानने का प्रयास किया जाता है। प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है। हर बच्चे की पसंद–नापसंद रुचियाँ, कौशल और व्यवहार के तरीके, सीखने की गति एवं क्षमता अलग–अलग होती है। कोई बच्चा अच्छे से बोल सकता है तो कोई लिख सकता है। कोई बच्चा गतिविधि से समझ सकता है तो कोई पुस्तक पढ़कर। अतः शिक्षक कक्षानुसार विषयानुसार उपकरणों का उपयोग करें।

3.6 कौशलों का विकास एवं मूल्यांकन–

विभिन्न विषयों की कक्षावार किताबें अवधारणाओं को समझने का माध्यम होती हैं उनकी सहायता से बच्चों में कौशलों का विकास किया जाता है। किसी कार्य को सीखकर बच्चा जो योग्यता प्राप्त करता है। उसे कौशल कहते हैं। कौशल पर पकड़ बनाने के लिए बच्चे का सीखना और उसका क्रमबद्ध रूप से अभ्यास करना आवश्यक है। अतः कौशल में निपुणता हासिल करने के लिए बार–बार अभ्यास करना आवश्यक है।

उदाहरण– सायकल चलाना हम एकाएक नहीं सीख सकते। इसके लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है।इस दौरान हम गलतियाँ करके भी सीखते हैं और उसमें सुधार लाते हैं। कुछ प्रयासों के बाद हम इतने पारंगत हो जाते हैं कि वह कार्य बहुत सहज लगने लग जाता है।

एक तरह का कौशल वह है जिसको हासिल करने के लिए व्यक्ति कोई कार्य करते समय दिमाग के साथ अपनी इंद्रियों का भी इस्तेमाल करता है, जैसे– मिट्टी के बर्तन बनाने का कौशल। यह सबसे पुराना और प्रचलित कौशल है। बर्तन बनाने के लिए सर्वप्रथम कुम्हार मिट्टी का चुनाव करता है क्योंकि उसे पता है कि चिकनी मिट्टी से बहुत आसानी से बर्तन बनते हैं। फिर इसको लचीला बनाने के लिए राख मिलाकर, चाक पर रखकर घुमाता है तथा डंडे व हाथों का उपयोग कर चाक की लय की सहायता से मिट्टी को मनचाहा आकार देता है। इस तरह कुम्हार को अपना पूरा ध्यान मिट्टी के बर्तन बनाने पर केन्द्रित करना पड़ता है। बर्तन पर नक्काशी करने के लिए नाखूनों का उपयोग करता है। फिर धूप में सुखाता है। इस पूरी प्रक्रिया में वह अपने दिमाग के साथ–साथ अपनी इंद्रियों का भी उपयोग करता है। इसी तरह प्रत्येक कार्य के कुछ मूलभूत कौशल होते हैं तथा हमें उस विषय का ज्ञान होता है। **उदाहरण–** प्रत्येक विषय के अपने कौशल होते हैं–

पर्यावरण के कौशल हैं– अवलोकन, वर्गीकरण, तुलना, खोजबीन करना, प्रश्न करना, सामान्यीकरण करना है।

भाषा के कौशल हैं– सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि।

किंतु विषय के कौशल एवं कुम्हार के मिट्टी से बर्तन बनाने के कौशल में मूलभूत अंतर भी है। बर्तन बनाना, साइकिल चलाना यदि कोई बच्चा सीख लेता है और कुछ समय के लिए छोड़ भी देता है तो कुछ समय के बाद थोड़े प्रयास से उसे वह फिर सीख लेता है। लेकिन अवलोकन करना, तुलना करना, वर्गीकरण करना, बोलना, लिखना, पढ़ना, प्रश्न पूछना आदि कौशल इस प्रकार के कौशल से अलग हैं। इस प्रकार के कौशलों में बच्चे को हर बार नए–नए प्रयास करने की जरूरत होती है और हर प्रयास के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष हमेशा अलग–अलग होते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा 3 में पढ़ने का कौशल एवं कक्षा 6 या 8 में पढ़ने का कौशल अलग–अलग होगा। अतः स्तरानुसार कौशल में निपुण होने के लिए पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता होगी। शिक्षक मूल्यांकन कौशलों का करें ना कि विषयवस्तु के रटने का।

*****

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के उपकरण
(Tools for CCE)

4

सतत् आकलन के दौरान बच्चों ने कितना सीखा यह जानने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है। उपकरण का तात्पर्य उन गतिविधि से है जिसका उपयोग लिखित कौशलों के आकलन के लिए करते है जैसे– मौखिक कार्य, लिखित कार्य, प्रोजेक्ट आदि। इनकी सहायता ले यह पता कर सकते हैं कि बच्चा सीख रहा है या नहीं सीखने की गति क्या है, आदि नहीं सीख पा रहा है तो कौन–कौन से कारण है। चूँकि प्रत्येक बच्चा अपने आप में अद्वितीय होता है। अतः शिक्षक कक्षानुसार उपकरणों का उपयोग होगा। आपकी सहायता के लिए कुछ उपकरणों पर चर्चा हम आगे कर रहे है।

4.1 उपकरण

4.1.1 मौखिक–

यह एक बहुत ही सरल पर अधिक प्रभावशाली उपकरण है। इस उपकरण के माध्यम से बच्चे की अभिव्यक्ति क्षमता, विषय की समझ तथा भाषायी कौशल जैसे– उच्चारण, लिंग एवं वचन के अनुसार वाक्य संरचना, गद्य एवं पद्य का वाचन, मौलिक विचार आदि का मूल्यांकन किया जा सकता है। मौखिक मूल्यांकन सभी विषयों में किया जा सकता है। गणित में सूत्र, पहाड़े, गिनती आदि मौखिक पूछे जा सकते हैं। मौखिक आकलन प्रश्न पूछकर, चर्चा किया जा सकता है।

मौखिक मूल्यांकन के संकेतक–

- विषयानुरूप प्रस्तुति
- मौलिकता
- सहभागिता
- आत्मविश्वास

4.2 अवलोकन Observation)-

अवलोकन के द्वारा बच्चों के विषय ज्ञान एवं व्यावहारिक ज्ञान का मूल्यांकन किया जाता है। अवलोकन द्वारा मूल्यांकन एक दिन में नहीं किया जा सकता। अवलोकन हेतु साक्ष्यों की आवश्यकता होती है, जैसे– पोर्टफोलियो, कक्षा कार्य, गृह कार्य, प्रदत्त कार्य, प्रोजेक्ट कार्य आदि। सहपाठी–शिक्षक से प्राप्त टीप तथा बच्चों से बातचीत कर उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन एवं दक्षताओं को देखकर भी मूल्यांकन किया जा सकता है।

सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र के मूल्यांकन में अवलोकन का महत्वपूर्ण स्थान है। अवलोकन व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है। अवलोकन भिन्न –भिन्न गतिविधियों और परिवेश में किया जाना चाहिए। शिक्षको से यह अपेक्षा की जाती है कि अवलोकन से प्राप्त बिंदुओं को शिक्षक अपनी डायरी में लिखें एवं बच्चे के क्रमिक विकास को देखें।

4.1.3 पोर्टफोलियो (Portfolio)-

पोर्टफोलियो बच्चे के समग्र व्यक्तित्व का आकलन है। पोर्टफोलियो एक फाइल होती है जिसका निर्माण बच्चे स्वयं कर सकते हैं। इस पोर्टफोलियो के सामने पृष्ठ में बच्चों की सामान्य जानकारी लिखने के साथ–साथ बच्चे अपने रुचि अनुसार से सजाते है। प्रत्येक बच्चा अपने पोर्टफोलियो को आकर्षक ढंग से सजा भी सकता है। इसे बच्चे अपने पास या कक्षा में जगह होने पर रख सकते हैं। इसमें बच्चों द्वारा किए गए उन कार्यों का संग्रह होता है जिसे कक्षा शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कराया जाता है, जैसे– बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र, लिखी गई कहानी, कविता या स्वयं का अनुभव, किसी घटना का वर्णन, कोई अच्छी बात, स्वमूल्यांकन–प्रपत्र आदि। पोर्टफोलियो में ख़ास–ख़ास चीज़ों को ही रखा जाए अन्यथा संधारण करने एवं अवलोकन करने में कठिनाई होगी। इस पोर्टफोलियो को देख सकते हैं। बच्चे भी अपने पोर्टफोलियो को देखकर पूर्व में एवं वर्तमान में किए गए कार्यों की तुलना कर स्वमूल्यांकन कर सकते हैं।

पोर्टफोलियो में रखी जाने वाली सामग्री–

- बच्चों को प्राप्त प्रमाण–पत्र, प्रशस्ति पत्र।

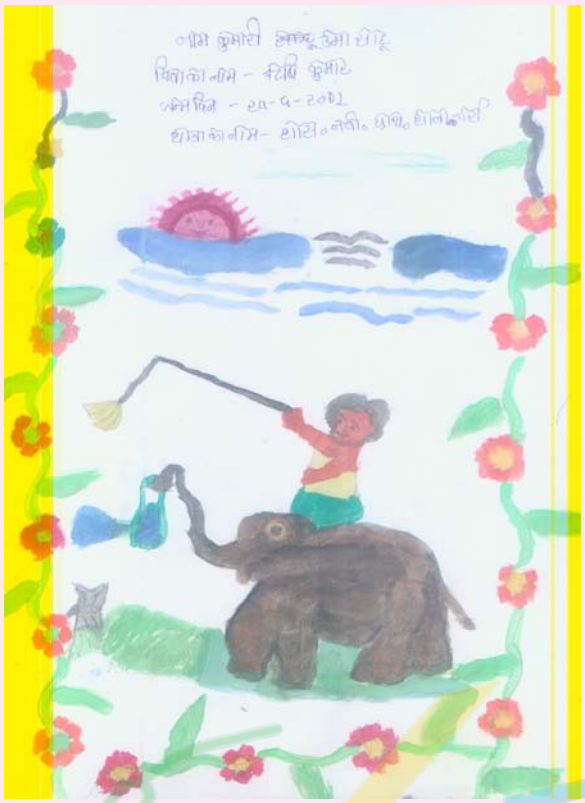

कक्षा पाँचवी के बच्चे द्वारा बनाया गया पोर्टफोलियो

- बच्चे द्वारा बनाई गई सृजनात्मक कलाकृतियाँ, ड्राइंग, पेंटिंग, कागज़ की सामग्री आदि।
- बच्चों द्वारा लिखी गई कविताएँ, कहानियाँ, लेख, निबंध, अनुभव आदि।
- कुछ अतिरिक्त जो बच्चे रखना चाहें।

4.1.4 प्रदत्त कार्य– (Assignment)

प्रदत्त कार्य का मुख्य उद्देश्य पाठ्य–पुस्तकों में निहित अवधारणाओं के संबंध में और अधिक जानकारी एकत्रित करना है जिससे बच्चों के ज्ञान में वृद्धि हो सके। ये जानकारियाँ स्थानीय परिवेश, समाचार–पत्र या चर्चा कर एकत्रित किए जा सकते हैं। बच्चे अपने किए गए कार्यों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इसमें उनकी सृजनशीलता, कल्पनाशीलता विकसित होती है। प्रदत्त कार्य ऐसे हो जिसे बच्चे को कार्य करने में आनंद आए, कुछ अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त हो। जिसमें सूचनाओं की खोज करने विचारों का सृजन करने विद्यालय के भीतर और बाहर होने वाले अधिगम को जोड़ने का अवसर मिले जैसेः–

- अपने आस–पास पाए जाने वाले औषधीय पौधों के बारे में पता करके उनके नाम लिखो और पता करो कि वे किस बीमारी में काम आते हैं।
- पिछले पाँच दिनों के दैनिक अख़बार का अवलोकन करो और उन सूचनाओं को लिखो जो आपके अनुसार पर्यावरण से संबंधित हैं।
- आपके घर में पाए जाने वाली विभिन्न आकार की पाँच–पाँच वस्तुओं की सूची बनाइए।
- किन्हीं भी दस शब्दों/वाक्यों को अपने मित्र या पड़ोसी की भाषा में (कम से कम पाँच भाषाओं) अनुवाद करो।

मूल्यांकन के संकेतक (Indicators)-

- विषय की समझ योजना बनाना,
- किए गए कार्य का परिवेश के साथ अंतर्संबंध
- कार्य की पूर्णता
- प्रस्तुतीकरण का तरीका
- निष्कर्ष

4.1.5 सर्वे –

सर्वे के माध्यम से हम आकड़ों को प्राप्त करते हैं जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार की योजनाओं के लिए तथा समस्या सुलझाने के लिए किया जाता है। सर्वे के माध्यम से बच्चों में वर्गीकरण, तुलना, सारणी बनाने, समूह में कार्य करने, लोगों से बातचीत करने, निष्कर्ष निकालने आदि कौशलों का विकास होता है। सर्वे का कार्य बच्चे अकेले या समूह में कर सकते है।

उदाहरण –

- कोई भी पाँच मित्रों के परिवारों के सदस्यों के शिक्षा के स्तर का सर्वे करो तथा पता करो कि उनके परिवार में कितने लोग कम पढ़े–लिखे हैं कितने लोग बारहवीं पास हैं तथा कितने लोगों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है।
- आपके पड़ोस में रहने वाले पाँच परिवारों का सर्वे कर पता करो कि उनके यहाँ यातायात के कौन–कौन से साधन हैं ? तथा उसका पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है।
- कक्षा के किन्हीं पाँच विद्यार्थियों से बातचीत कर पता करो कि उनके दादाजी के कितने बच्चे हैं एवं पिताजी के कितने बच्चे हैं। लड़के–लड़कियों की संख्या अलग–अलग लिखो एवं सारणी बनाकर विश्लेषण करो कि दादाजी एवं पिताजी के परिवार के सदस्यों की संख्या में क्या अंतर आया तथा उसका सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

शाला में बच्चों द्वारा किए गए सर्वे का उदाहरण–

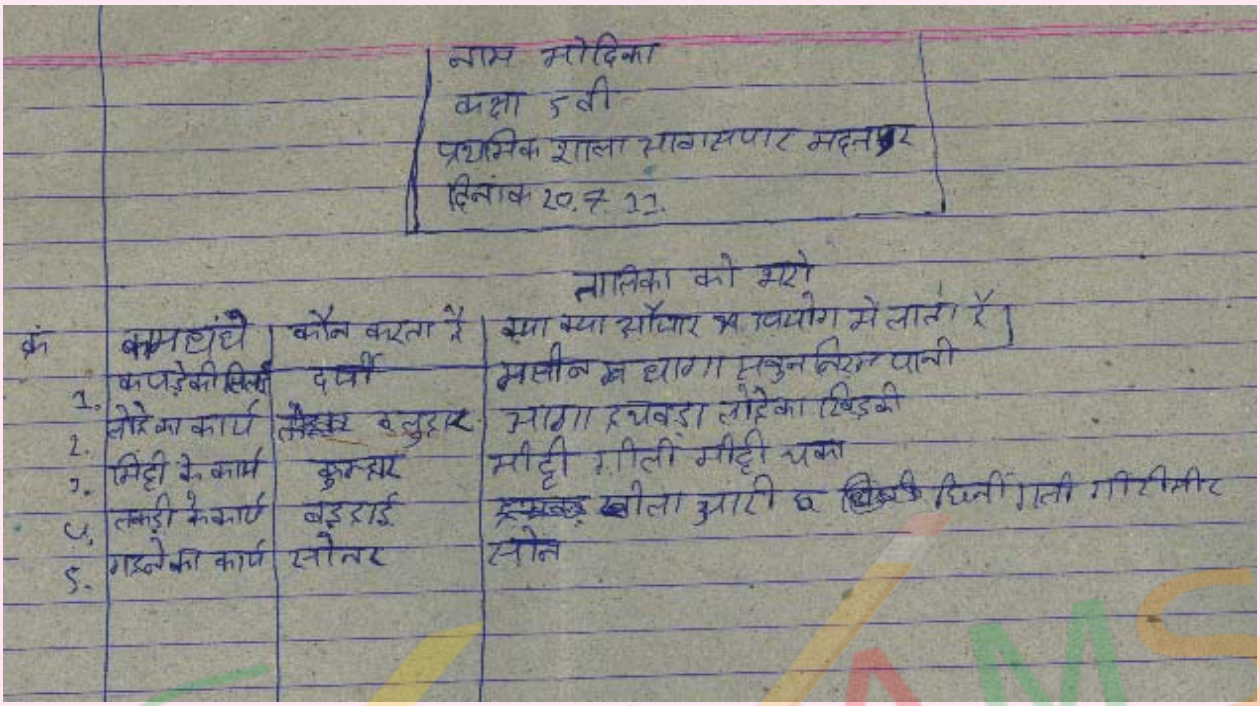

नाम मोदिका
कक्षा 5वी
प्राथमिक शाला सागासपार मदनपुर
दिनांक 20.7.11.

तालिका को भरो

क्र	कामधंधे	कौन करता है	क्या क्या औजार उपयोग में लाते हैं
1.	कपड़े की सिलाई	दर्जी	मशीन धागा सुई कैंची पानी
2.	लोहे का कार्य	लोहार	भाथा हथौड़ा लोहे का खिड़की
3.	मिट्टी के कार्य	कुम्हार	मीट्टी गीली मीट्टी चक्का
4.	लकड़ी के कार्य	बढ़ई	हथौड़ा कीला आरी छिन्नी गीली गीरीमीट
5.	गहने का कार्य	सोनार	सोना

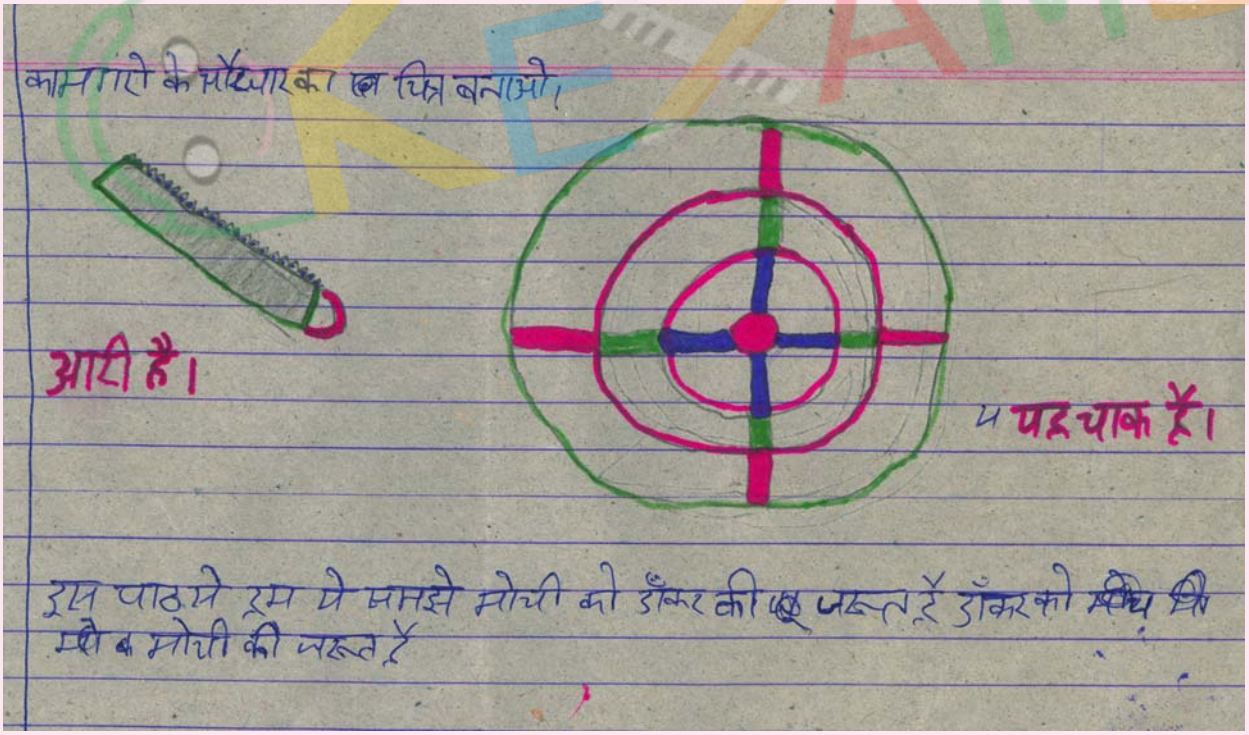

कामगारों के औजार का चित्र बनाओ,

इस पाठ से हम ये समझे मोची को डॉक्टर की जरूरत है डॉक्टर को भी
मोची की जरूरत है

शिक्षक द्वारा किए गए प्रश्न–

1. सारणी बनाओ कि आपके आस–पास या गाँव में कौन–कौन से काम धंधे किए जाते हैं? कौन करता है तथा कौन–कौन से औजार उपयोग में लाये जाते हैं?
2. अगर दर्जी नहीं होता तो क्या होता?
3. अगर बढ़ई नहीं होता तो क्या होता?
4. कामगारों के औज़ारों के चित्र बनाओ।
5. इस पाठ से आपको क्या समझ में आया?

मूल्यांकन के संकेतक–

- योजना बनाना
- बच्चे द्वारा किया गया वास्तविक कार्य
- प्रस्तुतीकरण
- निष्कर्ष

4.1.6 प्रोजेक्ट–

प्रोजेक्ट सर्वे के आगे की प्रक्रिया है। इसमें सर्वे द्वारा प्राप्त आंकड़ों का उपयोग किसी कार्य के पूर्ण होने में करते हैं। प्रोजेक्ट कार्य में निष्कर्ष तक स्वयं खोज कर पहुँचना होता है यह उद्देश्य पूर्ण गतिविधि होती है।

उद्देश्य–

1. प्रोजेक्ट कार्य के माध्यम से बच्चों में हायर आर्डर थिंकिंग स्किल **(Higher Order Thinking Skill)** **जैसे**– समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता, खोज करने की दक्षता, चिंतनशील विचार, अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना।
2. स्वयं करके सीखने की प्रवृत्ति का विकास करना।
3. समूह में कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास करना।
4. बच्चों में खोज की प्रवृत्ति का विकास करना।

प्रोजेक्ट की प्रकृति–

1. छोटे एवं बच्चों द्वारा करने योग्य हो अर्थात् प्रोजेक्ट ऐसे हो जो स्थानीय परिवेश में ही किए जा सकें।
2. दैनिक जीवन से जुड़े हो, पूर्व ज्ञान व कक्षा की दक्षता पर आधारित हो।
3. पुस्तकों से सीधे उत्तर प्राप्त न हों, बच्चे स्वयं के अनुभव से कुछ कार्य करके पूर्ण कर सकें।
4. बच्चों की खोज की प्रवृत्ति को बढ़ाने वाला व समस्या समाधान वाले हो।
5. अधिक सामग्री की आवश्यकता न हो तथा बच्चों के कक्षा स्तर के अनुरूप हो।
6. प्रोजेक्ट कार्य करने में कोई खतरे वाली स्थिति न हो।

प्रोजेक्ट कार्य कैसे करें ?

1. प्रोजेक्ट कार्य समूह/व्यक्तिगत तौर पर करें। (समूह अधिकतम 4–5 बच्चों का हो।)
2. विषयानुसार योजना बनाएँ।
3. कार्य करने की योजना का क्रियान्वयन करें।
4. किए गए कार्य के आधार पर प्रस्तुतीकरण/फाइल/चार्ट आदि तैयार किए जाए।
5. प्रत्येक समूह द्वारा किए गए कार्य का प्रस्तुतीकरण तथा चर्चा कराएँ।

मूल्यांकन के संकेतक–

- योजना बनाना
- बच्चे द्वारा किया गया वास्तविक कार्य
- प्रस्तुतिकरण
- निष्कर्ष

कुछ प्रोजेक्ट के उदाहरण–

- अपने परिवार की आय–व्यय का लेखा–जोखा तैयार करना।
- खेती की पैदावार में हुए लाभ–हानि का लेखा–जोखा तैयार करना।
- लकड़ी की सीकों से विभिन्न आकार की ज्यामितीय आकृतियाँ बनाना।

उदाहरण–

- आपके परिवार या पड़ोसी से पता करो कि पिछले पाँच सालों में एक एकड़ खेत में कितने बोरे धान का उत्पादन हुआ है तथा उत्पादन बढ़ने या घटने के कारण क्या हैं ?

वर्ष	धान उत्पादन एक एकड़ में
2005	16 बोरा
2006	11 बोरा
2007	19 बोरा
2008	24 बोरा
2009	21 बोरा
2010	29 बोरा
कुल	129 बोरा

कारणः– वर्ष 2006 बीमारी होने के कारण कम उत्पादन हुआ। वर्ष 2007 से खेत में सिंचाई की गई अच्छी खाद एवं कीटनाशक दवाईयों का भी छिड़काव किया गया। जिससे उपज में वृद्धि हुई और हमारे घर की हालत में सुधार हुआ। उसके बाद लगातार दवाई एवं खाद का उपयोग करते रहे।

(भूपेन्द्र सिन्हा, आठवीं, खैरझिटी, महासमुंद)

मूल्यांकन के संकेतक–

- बच्चे के स्वयं की जानकारी की सत्यता
- आत्मविश्वास
- बच्चे की प्रगति
- विषय की समझ बनाने हेतु किए गए प्रयास आदि।

4.1.7 खुली पुस्तक– मूल्यांकन में खुली पुस्तक का उपयोग मुख्य रूप से भाषायी दक्षताओं की जाँच के लिए किया जाता है जैसे कोई भी पृष्ठ देखकर उसमें लिंग, वाक्यों के प्रकार, विशेषण, मुहावरे आदि देखकर लिखना, या किसी पाठ से अधिक–से–अधिक प्रश्न बनाकर दूसरे समूह से पूछना, आर्टिकल को ढूँढ़कर लिखना आदि।

4.1.8 समूह कार्य– बच्चे समूह में रहकर जल्दी एवं अच्छी तरह से सीखते हैं। समूह में कार्य करने से उनमें सामाजिक भावना का विकास होता है। प्रोजेक्ट कार्य, सर्वे कार्य, प्रदत्त कार्य आदि समूह में दिये जा सकते हैं। शिक्षक 4 से 5 बच्चों का समूह बनाकर समूह कार्य करवाएँ। समूह रैण्डम सलेक्शन (**Random Selection**) से बनाएँ जिससे सभी समूह में सभी प्रकार के बच्चों की भागीदारी हो सके।

मूल्यांकन के संकेतक–

- समूह में दिये गए कार्य पर व्यक्तिगत प्रश्न पूछना
- समूह में बच्चे की भागीदारी
- नेतृत्व क्षमता
- सहयोग
- कार्य की पूर्णता समय नियोजन

4.1.9 लिखित कार्य–

मूल्यांकन का यह एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इस उपकरण के माध्यम से बच्चों की भाषायी त्रुटियाँ, जैसे– मात्रा, शब्द, लिंग, वाक्य संरचना को सुधार कर, भाषायी कौशलों का विकास किया जा सकता है। इस उपकरण के माध्यम से बच्चों की मौलिक अभिव्यक्ति, विचारों की क्रमबद्धता, वर्गीकरण, तर्क क्षमता, चिंतन शैली, सृजनशीलता आदि की जाँच करते है। लिखित कार्य के अंतर्गत प्रश्न–उत्तर, क्लोज परीक्षण, श्रुत लेखन, मौलिक लेखन संबंधी कार्य कराए जा सकते हैं। शिक्षक लिखित कार्य कराते समय विशेष सावधानी रखें। जैसे– प्रश्न घुमावदार न हो, स्पष्ट हो, प्रश्न की भाषा सरल हो, प्रश्न बच्चों के अनुभवों एवं कल्पनाशीलता पर आधारित हो, जिससे बच्चों को प्रश्न हल करते समय मज़ा आए एवं उन्हें बनाते समय तर्क कर सकें, चिंतन कर सकें।

मूल्यांकन के संकेतक–

- विषयानुरूप प्रस्तुति
- व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ
- विचारों की मौलिकता एवं क्रमबद्धता
- लिखावट की स्वच्छता

4.1.10 स्वमूल्यांकन (Self Assessment)-

बच्चों द्वारा खुद का मूल्यांकन किया जाता है। कोई भी कार्य करने के बाद बच्चे स्वयं सोचें कि किसी कार्य को कैसे और अच्छा कर सकते हैं। इस हेतु शिक्षक बच्चों से एक प्रारूप का निर्माण कराएँ जिसे बच्चों को खुद ही भरने दिया जाए। (पेज क्र. 64,65 देखें उदाहरण के लिए) यह कार्य सप्ताह में एक दिन किया जा सकता है। भरे हुए प्रारूप को पोर्टफोलियो में रखा जाए।

विषय संबंधी स्वमूल्यांकन के लिए किताबों के पीछे खाली जगह में बच्चे स्वयं लिखें, उन्हें क्या–क्या आता है तथा क्या–क्या नहीं आता। शिक्षक बच्चे द्वारा किए गए स्वमूल्यांकन में किसी प्रकार का दबाव या तनाव उत्पन्न न करे। बल्कि उन्हें प्रेरित करे कि यदि नहीं आता है तो क्या करोगे, किससे पूछोगे आदि।

4.2 विवरणात्मक टीप

विवरणात्मक टीप बच्चे द्वारा प्राप्त उपलिब्ध का संक्षिप्त विवरण है। विवरणात्मक टीप का आशय बच्चे के रिपोर्ट कार्ड में केवल अच्छा उत्तम साधारण विशेष प्रयास की आवश्यकता है आदि लिखना नहीं है। रिपोर्ट कार्ड प्राप्त अंक या ग्रेड से यह पता चलता है कि बच्चे का उपलिब्ध स्तर अच्छा है या कम है। किंतु यह पता नहीं चलता की बच्चा किस कौशल में अच्छा है या किस कौशल में विशेष प्रयास की जरूरत है। अक्सर पालक एवं बच्चे उच्च अंक या ग्रेड पाकर खुश हो जाते है किंतु व्यवहारिक रूप में जब बच्चा अपने दैनिक जीवन मे उपयोग नहीं कर पाता तो हम कहते है कि पढ़ लिख कर क्या फायदा हुआ।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में विवरणात्मक टीप कौशलों के आधार पर लिखी जाती है कि बच्चे के क्या–क्या आता है एवं कहां पे मदद की आवश्यकता है। इस टीप से पालक अपने बच्चे के बारे में जान जाते है कि उनके बच्चे को भाषा, गणित, पर्यावरण में क्या–क्या आता है। किस क्षेत्र में उसकी समझ है। बच्चे विवरणात्मक टीप पढ़कर अपना स्वमूल्यांकन कर सकते है। शिक्षक टीप के आधार पर अपने शिक्षण पद्धति में सुधार कर सकते है। (यदि कक्षा के अधिकांश बच्चे को डी या ई ग्रेड मिला है तो शिक्षक अपने शिक्षण पद्धति में सुधार करता है।) विवरणात्मक टीप कौशलों के आधार पर लिखें जाए।

टीप लिखते समय ध्यान रखें–

1. टीप बच्चे के विकास में सहायक हो किसी भी स्थिति मे बाधा न बने।

2. टीप बच्चे का मार्गदर्शन करें, बच्चे की गरिमा को चोट न पहुंचाए।

3. टीप छोटी व स्पष्ट हो। टीप लिखते समय संबंधित व्यक्तियों जैसे– अभिभावक, मित्र शाला के अन्य सदस्यों से प्राप्त मत को ध्यान में रखा जाए।

4. टीप लिखते समय, पूर्व में लिखी गयी टीप के आधार पर हुयी प्रगति को भी ध्यान में रखा जाए।

5. टीप बच्चे के व्यक्तित्व के प्रत्येक पक्ष को परखकर लिखी जाए।

6. टीप प्रत्येक विषय के प्रत्येक पाठ की प्रकृति को ध्यान में रखकर लिखी जाए। विषयों की प्रकृति अलग–अलग होती है तथा एक ही विषय के अलग–अलग अध्याय पढ़ाने के उद्देश्य भी अलग–अलग होतें है। बच्चों में व्यक्तिगत भिन्नता के कारण सीखने की गति तथा तरीके अलग–अलग होते है। अतः टीप प्रत्येक बच्चे के लिए, विषयवार अलग–अलग होनी चाहिए। टीप यह दर्शाए कि–

बच्चा क्या जानता है और उसके साथ कहां कार्य करने की आवश्यकता है।

विवरणात्मक टीप कैसे लिखें–

रिपोर्ट कार्ड का प्रारूप (संज्ञानात्मक क्षेत्र)				
क्षेत्र	प्रथम सेमेस्टर		द्वितीय सेमेस्टर	
	ग्रेड	विवरणात्मक टीप	ग्रेड	विवरणात्मक टीप
हिन्दी	C	वाक्यों को लिख लेता है परन्तु वाक्यों में मात्रा संबंधी त्रुटियों को दूर करने के लिए मदद की आवश्यकता है।	A	क्रमबद्ध रूप से मौलिक लेखन कर लेता है।
गणित	B	एक अंकों का जोड़–घटाना कर लेता है उधार वाले सवालों में प्रयास की आवश्यकता है।	A	सवालों को सही एवं जल्दी बना लेता है।
पर्यावरण	B	वर्गीकरण, तुलना में अंतर नहीं कर पाता है।	B	अवलोकन क्षमता विकसित करने की आवश्यकता है।
अंग्रेजी	B	लिंग के अनुसार क्रियाओं का उपयोग नहीं कर पाता।	C	अंग्रेजी बोलने एवं लिखने में गलतियाँ होती है निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है।

रिपोर्ट कार्ड का प्रारूप (सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र)				
क्षेत्र	प्रथम सेमेस्टर		द्वितीय सेमेस्टर	
	ग्रेड	विवरणात्मक टीप	ग्रेड	विवरणात्मक टीप
चित्र कला	C	आकृतियाँ बनाता है। किन्तु आकार सही नहीं होता है। रंगों का उपयोग करता है।	A	चित्र को सफाई से बनाता है। अपने मन से चित्र बनाता है।
पेपर कटिंग	C	कागज को मोड़ लेता है। पेपर कटिंग में सहयोग की आवश्यकता है।	B	कागज को मोड़कर काटना सीखा गया है।
मूद्रा कला	A	मिट्टी के सामान बनाने में रूचि लेता है। पशु–पक्षियों की आकृतियों अच्छे से बनाता है।	B	मिट्टी के सामान बनाता तो है। किन्तु हिफाजत से नहीं रख पाता।
खोलकूद योग	A	खोलकूद में भाग लेता है। नियमों की जानकारी है। खोल में नेतृत्व करता है।	A	योग को अच्छे से करता है।
स्वच्छता	B	प्रतिदिन हाथ धोकर खाता हैं। कभी–कभी नाखून नहीं कटे होते हैं।	A	हाथ धोकर भोजन करता है। नाखून कटे रहते है। शर्ट की बटन लगे रहते है।

समेटिव आकलन
(Summavive Assessment)

5

5.1 समेटिव आकलन क्या है? (सीखने का आकलन) (Assessment of Learning)

समेटिव आकलन सीखने का आकलन है। एक निश्चित अवधि में बच्चे ने पाठ्यक्रम को कितना सीखा यह जानने के लिए किया जाता है। सीखने का आकलन निर्धारित उपकरणों द्वारा किया जाता है। हमारे राज्य में समेटिव आकलन पेपर–पेंसिल (लिखित) रूप में किया जा रहा है। लिखित रूप में आकलन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि प्रश्न छोटे हो, बच्चों के अनुभव से हो बच्चों को प्रश्न हल करने में आनंद आए तथा प्रश्नों के उत्तरो को उन्हें रटना न पड़े।

5.2 समेटिव आकलन क्यों?

- एक निश्चित अवधि एवं पाठ्यक्रम के पश्चात् वांछित कौशलों के विकास कितना हो पाया है। यह जानने के लिए।
- सीखे गए कौशलों का अपने दैनिक जीवन में अनुप्रयोग कितना कर पा रहा है, यह जानने के लिए।
- विभिन्न कौशलों में परस्पर संबंध स्थापित कर ज्ञान के सुदृढ़ीकरण के लिए।

5.3 समेटिव आकलन कब करें?

समेटिव आकलन प्रत्येक सेमेस्टर के अंत में किया जाए।

प्रथम सेमेस्टर– नवम्बर अंतिम सप्ताह में प्रथम समेटिव

द्वितीय समेस्टर– अप्रैल के द्वितीय सप्ताह में द्वितीय समेटिव

प्रत्येक सेमेस्टर के समेटिव आकलन में 50% कोर्स शामिल करना आवश्यक है। यदि कोई शिक्षक 50% से कम कोर्स करता है तो उस स्थिति में शिक्षक द्वारा पूर्ण किए गए कोर्स से निर्धारित प्रश्न संख्या को ध्यान में रखते हुए प्रश्न पत्र निर्माण करें। शेष बचे हुए कोर्स को दूसरे सेमेस्टर के समेटिव मूल्यांकन में शामिल करें। यदि कोई छात्र समेटिव आकलन के समय उपस्थित नहीं होता है या समेटिव आकलन में D या E ग्रेड प्राप्त करता है, तो ऐसे बच्चों के लिए अतिरिक्त समय देकर उपचारात्मक शिक्षण कर समेटिव आकलन करें। ऐसे समूह के बच्चों के प्रोफाइल में इसका उल्लेख करे जिससे अगली कक्षा के शिक्षक अध्ययन अध्यापन के समय विशेष ध्यान दे सकेंगे।

5.4 फॉरमेटिव आकलन एवं समेटिव आकलन में अंतर :

फॉरमेटिव	समेटिव
1. सीखने के लिए आकलन किया जाता है।	1. सीखने का आकलन किया जाता है।
2. इस आकलन में सीखने के दौरान सुधार की सम्भावना होती है जो अध्ययन अध्यापन के साथ निरंतर चलती रहती है।	2. इसमें भी सीखने में सुधार की सम्भावना होती हैं। किंतु इसके लिए विशेष समय की आवश्यकता होती है।
3. इस आकलन में सीखने के दौरान आने वाली समस्या का आकलन कर उसे दूर करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण किया जाता है।	3. समेटिव आकलन के पश्चात् उपचारात्मक शिक्षण किया जाता है।
4. यह आकलन मौखिक, लिखित, प्रोजेक्ट, सर्वे, पोर्टफोलियो, प्रदत्त कार्य, अवलोकन आदि द्वारा किया जाता है।	4. यह आकलन लिखित रूप मे किया जाता है।

5.5 समेटिव आकलन कैसे करें?

विभिन्न कौशलों के विकास का मापन विभिन्न प्रकार के लिखित प्रश्नों के माध्यम से किया जाता है। जिसमें प्रश्नों का आधार संज्ञानात्मक व्यवहार– ज्ञान, अवबोध, अनुप्रयोग, कौशल **(LOTS)** एवं विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन **(HOTS)** होता है।

5.6 समेटिव आकलन हेतु प्रश्न पत्रों का स्वरूप–

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के अर्न्तगत बच्चों के कौशलों का विकास किये जाने पर बल दिया जाता है। अतः बच्चों में निर्धारित कौशलों का विकास कितना हो पाया है इसकी जानकारी के लिए समेटिव व फॉरमेटिव आकलन किया जाता है। इस पैराग्राफ में समेटिव आकलन कैसे किया जाए एवं समेटिव आकलन हेतु प्रश्न पत्र का स्वरूप कैसा हो पर बात कहेंगे। यह जानने के लिए प्रत्येक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि कक्षावार "सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन संदर्शिका" का अवलोकन करें एवं आवश्यकतानुसार उपयोग करें।

जब हम प्रश्न पत्र के स्वरूप की बात करते है तब हमें निम्न बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है–

- प्रश्नों के माध्यम से किन कौशलों की जाँच करना चाहते है।
- प्रश्नों के प्रकार।
- प्रश्नों की संख्या।

5.6.1 प्रश्नों के माध्यम से किन कौशलों की जाँच करना चाहते है–

प्रत्येक प्रश्न का अपना उद्देश्य होता है जिसके माध्यम से आप यह जाँचने का प्रयास करते है कि बच्चे मे निर्धारित कौशल का विकास कितना हो पाया है। अतः प्रत्येक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अध्यापन कार्य से पूर्व पाठ में निहित कौशलों का चिह्नांकन करें। पाठ आधारित कौशलों के चिह्नांकन के लिए "सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन संदर्शिका" (कक्षावार) का उपयोग आप कर सकते है।

उदाहरण–

यदि हम उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों में सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत अवलोकन क्षमता, विश्लेषण, तर्क, क्षमता, निष्कर्ष निकालना आदि कौशलों का विकास करना चाहते है तो हमारे प्रश्न–पत्र में इस प्रकार के प्रश्न हो सकते है।

निम्न तालिका को पढ़कर प्रश्नो के उत्तर दीजिए।

स्थान	तापमान	समुद्रतल से ऊँचाई
मसूरी	$15^0C - 20^0C$	2000 मी.
देहरादून	$10 - 15^0C$	500 मी.
रायपुर	40^0C	300 मी.
जशपुर		2000–2500 मी.

(अ) तालिका में दी गई चार जगहों में से किस जगह का तापमान सबसे अधिक है?

.....

(ब) कौन–सी दो जगह मैदानी है?

$2^0C - 5^0C$

.....

(स) तालिका में देहरादून का तापमान देखकर बताओं कि ये किस मौसम का होगा?

.....

.....

(द) इनमें से किस स्थान पर बर्फ होने की सबसे अधिक संभावना है और क्यों?

.....

.....

.....

(इ) इनमें से किस स्थान पर सड़क बनाना आसान है और क्यों?

.....

.....

.....

5.6.2 प्रश्नों के प्रकार-

विभिन्न प्रकार की कौशलों की जाँचने का एक महत्वपूर्ण तरीका प्रश्न है। प्रश्न कई प्रकार के होते है।

A. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

B. अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

C. लघु उत्त्रीय प्रश्न

D. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

A. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-:

वस्तुनिष्ठ प्रश्न कई प्रकार के हो सकते है प्रमुखतः निम्न प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का समावेश अपने प्रश्न पत्रों में करें–

a. बहुविकल्पीय प्रश्न

b. जोड़ी मिलान प्रश्न

c. रिक्त स्थान

d. सही/गलत या हाँ/नहीं

प्रश्न– किसी ठोस बेलन के आधार की त्रिज्या 5 से.मी. और ऊँचाई 21 से.मी. तो बेलन का वक्रपृष्ठ संपूर्णपृष्ठ एवं आयतन ज्ञान करें।

प्रश्न– वर्षा ऋतु का वर्णन 10 वाक्यों में करो।

प्रश्न 2 नीचे दी गई आकृतियों मे कौन–सी आकृति त्रिभुज है?

उक्त आकृति का अवलोकन कर बच्चा इस बात के लिए तर्क लगाएगा कि किस आकृति में तीन भुजाएँ है इस तरह बच्चा अवलोकन एवं तर्क कर अपना उत्तर दे रहा है न कि रटकर।

a. **बहुविकल्पीय प्रश्न** ऐसे प्रश्नों में एक प्रश्न के नीचे चार विकल्प दिए जायेंगे जिनमें कोई एक सही जवाब होगा जैसे–

प्रश्न–3 नीति ने ट्रेन में मूंगफली खाई, आपके अनुसार नीति को मूंगफली के छिलके कहां फेंकने चाहिए–

(अ) ट्रेन की खिड़की के बाहर (ब) ट्रेन के अंदर

(स) ट्रेन के अंदर रखे कुड़ेदान में (द) ट्रेन के किसी अन्य डब्बे में

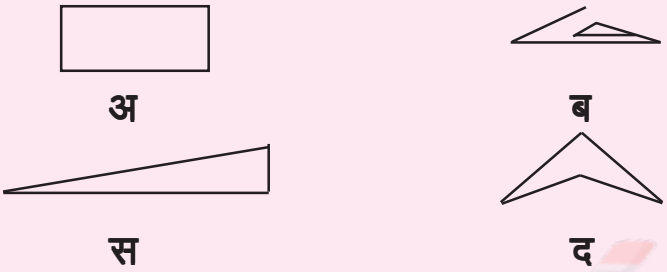

b. **जोड़ी मिलन प्रश्नः**

(ii) ऐसे प्रश्नों मे एक तरफ कुछ तथ्य होते है तथा दूसरी तरफ उसके जवाब या दूसरे संबंधित जथ्य हो तो है जिन्हें संबंधि आधारित मिलान करना होता है। जैसे–

जोड़ी मिलान करो–

a - eye

an - Fish

- bat

c. **रिक्त स्थान– किसी वाक्य के खाली स्थान को उपर्युक्त शब्द से भरना, जैसे–**

प्रश्न– ..... लोग कंदराओ और गुफाओं मे रहते थे।

प्रश्न– ..... काल में तोपों का विकास हुआ।

d. **सही/गलत या हाँ/नहीं– ऐसे प्रश्नों में कुछ तथ्य होते हैं जो सही या गलत या इनका जवाब हाँ/नहीं में होता है। जैसे–**

1. हमे हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए।
2. पोस्ट ऑफिस में + चिन्ह का उपयोग करते हैं।
3. स्वस्थ रहने के लिए खेलना जरूरी है।

B. **अति लघुउत्तरीय प्रश्न** दो अंक का होगा। जिसमें एक शब्द या अधिकतम एक वाक्य में उत्तर देना होगा।

उदाहरण– आपके पिताजी के बहन के पति को क्या कह कर बुलाएँगे। (कक्षा 4थी पर्यावरण पाठ रिश्ते नाते)

प्रश्न– वाक्य को पढ़कर शब्द पूरा करो–

1. कक्षा मे अंदर जाने पर उतारते है च□□/□ता
2. कुड़ा मुझमें डालें। कु□□□

प्रश्न– लाईन खींचकर मिलान करो कि कौन संसद से जुड़ा है तथा कौन विधानसभा से।

संसद		विधानसभा	
विधायक	प्रधानमंत्री	सांसद	मुख्यमंत्री

C. **लघुउत्तरीय प्रश्न**–1 जो तीन अंक का होगा। जिसमें तीस शब्द या अधिकतम तीन वाक्यों में उत्तर देना होगा।

उदाहरण– Question- Complete the Sentence.

1. Is this a butterfly?
   No,
   It is a .....
2. Is this a dog?
   No,
   It is a .....

लघुउत्तरीय प्रश्न 2 जो चार अंक का होगा। जिसमें पचास शब्द या अधिकतम पाँच वाक्यों में उत्तर देना होगा।

उदाहरण– घुलनशील एवं अघुनशील वस्तुओं की सूची बनाओ।

D. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पाँच अंक का होगा। जिसमें लगभग सौ शब्द या दस वाक्यों में उत्तर देना होगा।

उदाहरण– (उ.प्रा.हेतु) निम्न बिंदुओं के आधार पर एक पैराग्राफ लिखो।

- धान कौन–सी फसल है?
- कब बोया, कब काटा जाता है?
- धान के प्रकार?
- धान की कृषि के लिए मिट्टी एवं पानी?
- धान से संबंधित समस्याएँ?
- समर्थन मूल्य?

प्रश्न-पत्र का प्रारूप-

प्राथमिक स्तर (प्रश्नों की संख्या प्रकार एवं अंक विवरण तालिका)

विवरण	वस्तुनिष्ठ	अतिलघु	लघु (VSA)	दीर्घ (SA)	योग (LA)
प्रश्नों की संख्या	1(10)	7	6	2	1+15
अंक	1	2	3	4	–
योग	10	14	18	8	50

उच्च प्राथमिक स्तर (प्रश्नों की संख्या प्रकार एवं अंक विवरण तालिका)

विवरण	वस्तुनिष्ठ प्र.	अतिलघु प्र. (VSA)	लघु प्र. 1 (SA-1)	लघु प्र. 2 (SA-2)	दीर्घ प्र. (LA)	योग
प्रश्नों की संख्या	1(10)	7	6	2	2	1+17
अंक	1	2	3	4	5	–
योग	10	14	18	8	10	60

शिक्षक प्रश्न बनाते समय पाठ के समस्त कौशलों कर चिह्नांकन करें तद्नुसार वस्तुनिष्ठ अतिलघुत्तरीय, लघुत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों का निर्धारण करें। (इस हेतु **सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन संदर्शिका भाग–2** देखें)

अध्याय	कौशल 1	कौशल 1	कौशल 1	कौशल 1	कौशल 1
अध्याय 1					
अध्याय 2					
अध्याय 3					
अध्याय 4					
अध्याय 5					

1. एक अध्याय में कई कौशल हो सकते है। जिससे कौशल 1, कौशल 2, कौशल 3 .....के द्वारा प्रदर्शित किए है।
2. आप किसी भी कौशल पर विभिन्न प्रकार के प्रश्न बना सकते है। (प्रश्न के प्रकार– Objectiv type, VSA, SA-1, SA-2, LA)
3. प्रश्न पत्र बनाते समय आप किसी भी कौशल से किसी भी प्रकार के प्रश्न बना सकते है।
4. एक कौशल पर आप एक से भी अधिक प्रकार के प्रश्न बना सकते है।
5. आपको यह आवश्यक रूप से ध्यान रखना होगा की प्रश्न पत्र में निर्धारित प्रश्न संख्या, प्रश्नों के प्रकार के अनुरूप हो।
6. ब्लू प्रिंट में उल्लेखित कौशलों की संख्या व अध्याय की संख्या उदाहरण के लिए दिया गया है। आप इन संख्याओं को आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर सकते है।

समेटिव प्रश्न बनाते समय हम निम्न बातों का ध्यान अवश्य रखें

- प्रश्नों की भाषा सरल हो, घुमावदार न हो।
- प्रश्न हल करने के लिए दिशा निर्देश स्पष्ट हो। अंकन योजना प्रश्न पत्र में हो।
- प्रश्न पूछनें के उद्देश्य स्पष्ट हो।
- प्रश्न–पत्र में ज्ञान, अवबोध, अनुप्रयोग, कौशल, चिंतन आधारित प्रश्नों का समावेश हो।
- प्रश्न अवधारणा आधारित हो जो किताबों से परे बच्चों के अनुभवों पर आधारित हो अर्थात रटने पर आधारित न हो।
- प्रश्न–पत्र में सभी प्रकार के प्रश्न बहुविकल्पीय, अतिलघुउत्तरीय, लघुउत्तरीय, दीर्घउत्तरीय शामिल हो।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न सिर्फ जानकारी आधारित न हो यह अनुप्रयोग समझ एवं कौशलों पर आधारित हो।

*****

रिकार्ड संधारण एवं दस्तावेज़ीकरण
(Record Collection and Documentation)

6

मूल्यांकन हेतु शिक्षक को निम्नलिखित रिकार्ड रखना होगा–

- शिक्षक–डायरी **(Teachers Diary)**
- प्रोफाइल **(Profile)**
- मूल्यांकन पंजी **(Assessment Register)**

6.1.1 शिक्षक-डायरी (Teachers Diary)-

इसमें सतत् एवं व्यापक पाठ्यक्रम की योजना, फॉरमेटिव मूल्यांकन की योजना तथा उपचारात्मक शिक्षण योजना तथा सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र हेतु कराई जाने वाली गतिविधियों का उल्लेख होगा। इस डायरी को शिक्षक प्रतिदिन कक्षा में जाने से पूर्व तैयार करना होगा। जिसका प्रारूप निम्नानुसार है–

दिनाँक	विषय	अध्याय का नाम	कौशल	मूल्यांकन के उपकरण	समझ के पुनर्बलन हेतु किए गए प्रयास
14.7.2011	हिन्दी	पाठ 1 सीखो	कविता को हाव–भाव एवं आवाज में उतार–चढ़ाव के साथ सुना सकना	मौखिक	रामलाल, नीता और गीता कविता नहीं गा पा रहे थे तो उन्हें सामने बुलाकर या समूह के साथ कविता गाने को कहा गया।
			चित्रों पर बातचीत कर सकना	चर्चा	दिए गए चित्रों पर उनके अनुभव के आधार पर प्रश्न पूछें।
20.7.2011	गणित	पाठ 2 जोड़ना	दो अंकों का स्थानीय मान बता पाना।	कक्षा कार्य	1 से 100 तक की गिनती को बीच–बीच से पूछें एवं लिखवायें।
				मौखिक कार्य	
			एक अंकों के जोड़ के सवाल बना पाना	प्रदत कार्य	

मूल्यांकंन– उपरोक्त प्रारूप में प्रथम पाँच कॉलम को कक्ष में जाने से पूर्व लिखना है तथा छटवाँ कॉलम कक्षा मे कार्य संपन्न करन के बाद लिखना है।

6.2 प्रोफाइल (Profile)-

प्रोफाइल में प्रत्येक माह में प्रत्येक बच्चे के बारे में विषयवार टीप लिखी जाएगी। यह टीप कक्षा शिक्षक के अतिरिक्त विषय शिक्षक द्वारा भी लिखी जाएगी। प्रोफाइल का प्रारूप निम्नानुसार है

उदाहरण :–

विद्यार्थी का नाम	–	रामलाल
कक्षा	–	छठवी
पिता का नाम	–	श्री मोतीलाल
पिता की शिक्षा	–	पाँचवी
माता का नाम	–	श्रीमती शांति बाई
माता की शिक्षा	–	अशिक्षित
माता–पिता का व्यवसाय	–	मजदूरी

दिनांक	विषय	बच्चे को क्या–क्या आता है?	बच्चे को कहां मदद की आवश्यकता है	प्रमाण/साक्ष्य	बच्चे से संबंधित कोई प्रेरक व वास्तविक घटना/व्यवहार	अन्य शिक्षक/प्रधान पाठक/पालक/सहपाठी का अभिमत
अगस्त	हिन्दी	छोटे–छोटे वाक्यों को पढ़ लेता है।	स्पष्ट रूप से नहीं लिख पाता।	कॉपी, कक्षा में प्रस्तुतीकरण	गाना गा लेता है।	लोकगीत अच्छा गाता है। (सहपाठी)

(टीप– उपरोक्त सारणी में दर्शाई गई बातें उदाहरण स्वरूप हैं। इसी तरह माहवार, विषयवार टीप लिखें।)

6.3 मूल्यांकन पंजी (Assessment Register)-

मूल्यांकन पंजी में फॉर्मेटिव एवं समेटिव आकलन का रिकार्ड संधारण किया जाएगा। फॉर्मेटिव मूल्यांकन प्रत्येक सेमेस्टर के लिए किया जाएगा जो कि कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के समय उपयोग में लाए उपकरणों पर बच्चों के उपलब्धि स्तर के आधार पर होगा। फॉर्मेटिव मूल्यांकन हेतु पाँच उपकरणों का उपयोग किया जाएगा जिसका चयन दिए गए प्रारूप (पृ.क्र. 51 देखें)की साहयता से करें। उपकरणों का चुनाव विषयानुसार सभी बच्चों के लिए एक जैसा होगा, किंतु फीडबेक बच्चे द्वारा सर्वश्रेष्ठ पाँच उपकरणों के आधार पर दिया जाएगा। पेज क्र. 51 के प्रारूप में उपकरण वाले कॉलम में लिखने के लिए शिक्षण डायरी में उल्लेखित उपकरण वाले कॉलम की सहायता लें। यद्यपि पाठवार कौशल का आकलन विभिन्न उपकरणों के द्वारा किया जाएगा। दस्तावेजीकरण के समय पाँच उपकरणों का चुनाव करना होगा जिसमें बच्चों ने अच्छा परफॉम किया हो। यदि किसी बच्चे प्राप्तांक 30 प्रतिशत से कम होता है तो उपकरोक्त उपकरण में उपचारात्मक शिक्षण का अवसर दिया जाए। प्रत्येक उपकरण के लिए अधिकतम अंक इस प्रकार से होगा। कक्षा 3री से 5वी तक 10 अंक कक्षा 6वी से 8वी तक 8 अंक।

फॉरमेटिव आकलन के लिए प्रारूप

पाठ का नाम	आकलन के बिंदु/कौशल	गतिविधि	उपकरण	विद्यार्थी का नाम/रोल नम्बर										
				सीता	अनिता	ज्योति	नीलम	अमन	ओमी	अतुल	एडवर्ड	किस्ट्री	राम	रहीम
	पढ़ना, पढ़कर समझना	पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें पढ़वाना	मौखिक											
	मौलिक लेखन	कहानी लिखवाना	समूह कार्य											
	व्याकरण	संज्ञा, सर्वनाम शब्दों की सूची बनाना	खुली–पुस्तकें											

नोट : प्रत्येक विषय का अलग–अलग रिकार्ड संधारण करें। चुने गए पाँच अंकों को उल्लेखित कॉलम फारमेटिव के 1 से 5 तक कॉलम में भरें।

सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र मूल्यांकन																																					
	सहशैक्षिक क्षेत्र															व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुण																					
विद्यार्थियों के नाम	1. सृजनात्मक			2.सांस्कृतिक			3. साहित्यिक			4. खेलकूद/योग			5. कार्यानुभव			6. स्वच्छता			7. समयबद्धता एवं नियमितता			8. अनुशासन			9. सहयोग की भावना			10. नेतृत्व क्षमता			11. अभिवृत्ति			12. कार्यानुभव			ग्रेड
	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	आकलन 1	आकलन 2	ग्रेड	
1																																					
2																																					
3																																					
4																																					
5																																					
सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र के उपकरण – 1. पोर्टफोलियो 2. अवलोकन 3. चर्चा/साक्षात्कार 4. अन्य स्त्रोत से जानकारी (अन्य शिक्षक, सहपाठी)																																					

नोट– सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र के मूल्यांकन के लिए पेज. क्र. 23 व 24 में सुझाये गए तालिका का उपयोग कर सकते है। तालिका में सुझाये गए सहसैक्षिक क्षेत्र के संभावित गतिविधियों का उपयोग कर नीचे दिए गए प्रारूप में ग्रेड उल्लेखित करें।

संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन																									
विषय	प्रथम सेमेस्टर									द्वितीय सेमेस्टर															
	फॉरमेटिव–1						समेटिव			फॉरमेटिव–2						फॉरमेटिव–3						समेटिव			
	1	2	3	4	5	योग	अंक	योग F1+S1	ग्रेड	1	2	3	4	5	योग	1	2	3	4	5	योग	अंक	योग F2+F3+s2	ग्रेड	
हिन्दी																									
गणित																									
अंग्रेजी																									
पर्या./विज्ञान																									
सा.विज्ञान																									
संस्कृत																									
योग																									

नोट– 1 से 5 तक कॉलम में विषयवार जिन उपकरणों का उपयोग कर मूल्यांकन किया गया है। उससे प्राप्त अंकों को लिखे।

s=summetive

S=Semester

सम= समेटिव

सेमेस्टर के फॉरमेटिव वाले पाँचों कॉलम के लिए पृ.क्र. 52 में दिए गए फॉरमेटिव आकलन के प्रारूप का उपयोग करें।

प्रगति-पत्रक

स्कूल का नाम .....

विद्यार्थी का नाम .....

कक्षा .....

जन्मतिथि .....

पिता का नाम .....

माता का नाम .....

जाति .....

दाखिला क्रमांक .....

वर्तमान पता (निवास) .....

ऊँचाई .....

वजन .....

रूचि .....

मैं क्या बनना चाहता/चाहती हूँ .....

संज्ञानात्मक क्षेत्र

विषय	प्रथम सेमेस्टर (जुलाई से नवम्बर)		द्वितीय सेमेस्टर (दिसंबर से अप्रेल)	
	ग्रेड	विवरणात्मक टीप	ग्रेड	विवरणात्मक टीप
हिन्दी				
अंग्रेजी				
संस्कृत				
गणित				
विज्ञान				
सा.विज्ञान				
योग (ग्रेड)				

हस्ताक्षर (प्रति सेमेस्टर)

कक्षा शिक्षक **प्रधान पाठक** **पालक**

सह-संज्ञानात्मक क्षेत्र

क्षेत्र	उपक्षेत्र	प्रथम सेमे. (जुलाई से नवंबर)		द्वितीय सेमे. (दिसंबर से अप्रेल)	
		ग्रेड	विवरणात्मक टीप	ग्रेड	विवरणात्मक टीप
सहशैक्षिक	सृजनात्मक				
	सांस्कृतिक				
	साहित्यिक				
	खेलकूद / योग				
	कार्यानुभव				
व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुण	स्वच्छता				
	समयबद्धता एवं नियमितता				
	अनुशासन				
	सहयोग की भावना				
	नेतृत्व क्षमता				
	अभिवृत्ति				
योग					

हस्ताक्षर (प्रति सेमेस्टर)

कक्षा शिक्षक **प्रधान पाठक** **पालक**

उपस्थिति												
माह	**जून**	**जुलाई**	**अगस्त**	**सितंबर**	**अक्टूबर**	**नवंबर**	**दिसंबर**	**जनवरी**	**फरवरी**	**मार्च**	**अप्रेल**	**योग**
शाला लगने के दिनों की संख्या												
उपस्थिति												
पालक की उपस्थिति												

समेकित ग्रेड					
सेमेस्टर	**संज्ञानात्मक**	**सहसंज्ञानात्मक**	**योग**	**विशेष रिमार्क**	**कक्षा शिक्षक के हस्ताक्षर**
प्रथम					
द्वितीय					
समेकित ग्रेड					

समेकित ग्रेड = (प्रथम चरण का ग्रेड + द्वितीय चरण का ग्रेड)/2

प्रमाणित किया जाता है कि वर्ष ..... में आयोजित सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का ग्रेड ..... है ..... क्षेत्र में विशेष रूचि है।

हस्ताक्षर प्रधान पाठक

*****

स्व–मूल्यांकन का प्रारूप/चैकलिस्ट

बच्चे अपना मूल्यांकन स्वयं कर सकते है। बच्चे द्वारा किया गया मूल्यांकन शिक्षक के लिए मार्गदर्शन का काम कर सकता है। हमारे पाठ्यपुस्तकों में कई जगह पर स्वमूल्यंकन का प्रारूप दिया गया है। स्व–मूल्यांकन संज्ञानात्मक एवं सहसंज्ञानात्मक दोनों क्षेत्रों में किया जा सकता है। संज्ञानात्मक क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों में दिए गए पाठ के अंत में शिक्षक बच्चों से कहें कि इस पाठ में उन्हें कौन–सी बाते अच्छी लगी और कौन–सी बाते अच्छी नहीं लगी। स्व–मूल्यांकन से शिक्षक का समय भी बचता है एवं शिक्षक अविकसित गुण एवं व्यवहार के पर्याप्त विकास हेतु ध्यान दे सकते हैं। स्व–मूल्यांकन में बच्चे अपेक्षित गुण एवं व्यवहार विकसित होने ✓ (सही) एवं विकसित न होने पर ✗ (गलत) का निशान लगाते हैं।

क्र.	नाम	मुझे पहाड़े याद है	मैं होम वर्क करती हूँ	रोज शाला आती हूँ	खेल में भाग लेती हूँ
1.	राम	✓	✓	✓	✗
2.	रहीम	✓	✗	✓	✓
3.	नानक	✓	✓	✓	✓

नियमितता

क्र.	नाम	मैं रोज प्रार्थना में उपस्थित रहता/ती हूँ	मैं रोज सभी कालखंड में रहता/ती हूँ	मैं रोज शाला आता/ती हूँ	मैं नियमित पढ़ाई करता/ती हूँ
1.					
2.					
3.					

समयबद्धता

क्र.	नाम	मैं समय पर शाला आता/ती हूँ	मैं समय पर गृह कार्य करता/ती हूँ	मैं समय पर शाला आता/ती हूँ	मैं नियमित पढ़ाई करता/ती हूँ
1.					
2.					
3.					

स्वच्छता

क्र.	नाम	मेरी ड्रेस साफ सुथरी है	मेरे नाखून कटे हैं	मेरे दांत साफ है	मेरा बस्ता साफ है
1.					
2.					
3.					

अनुशासन/कर्त्तव्यनिष्ठा

क्र.	नाम	कक्षा में सबसे मिलजुल कर रहता/ती हूँ	शिक्षक द्वारा दिए कार्य पूरे करता/ती हूँ	जूते–चप्पल पंक्ति में रखता/ती हूँ	प्रार्थना उपरांत कक्षा में पंक्ति में जाता/ती हूँ
1.					
2.					
3.					

सहयोग की भावना

क्र.	नाम	बड़ो के सौंपे कार्य करता/ती हूं	अपने साथी की मदद करता/ती हूं	गिरने-फिसलने पर तत्काल उठाने में मदद करता/ती हूं	साथी द्वारा गलत उत्तर देने पर हंसता/ती नहीं हूं
1.					
2					
3.					

नेतृत्व की क्षमता

क्र.	नाम	समूह में काम करने पर सबको सिखाता/ती हूं	हर काम में सबसे आगे रहता/ती हूं	कक्षा को शांत अच्छा लगता है	कक्षा मॉनीटर/कैप्टन बनना पसंद है
1.					
2					
3.					

अभिवृत्ति

क्र.	नाम	अनावश्यक चलने पर पंखे का स्वीच बंद करता/ती हूं	बड़ों का आदर करता/ती हूं	शाला संपत्ति को नुकसान नहीं पहुंचाता/ती हूं	शाला संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वालों को रोकता/ती हूं
1.					
2.					
3.					

टीप- उपरोक्त प्रारूप यदि शिक्षक स्वयं अवलोकन करते हैं तो चैकलिस्ट कहलाएगी।

*****